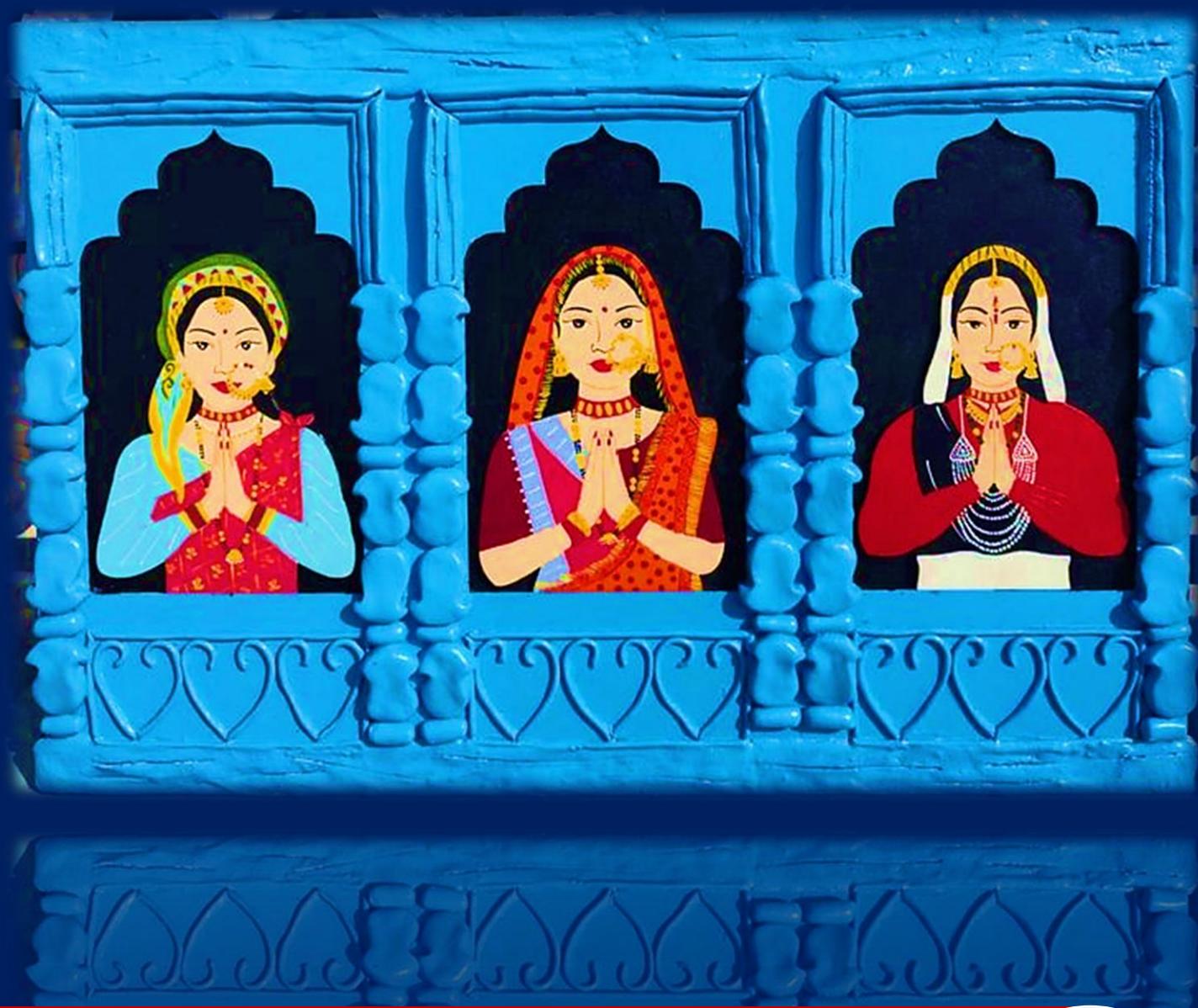


मानिला दाष्ठी

मासिक ई-पत्रिका

मंथन



राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुणीधार,
मानिला- 263 667 (अल्मोड़ा)



अंक- 04 | 2025-26

दिसम्बर, 2025

विवरणिका

इस्से अँक में

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ सं०
1.	सम्पादक की कलम से...	i
2.	छात्र-छात्रा लेख अनुभाग	1-3
3.	प्राध्यापक लेख अनुभाग	4-19
4.	समसामयिकी	20-22
5.	दिसम्बर माह में जन्मी उत्तराखण्ड की प्रमुख प्रेरणादायी हस्तियाँ	23-24
6.	दिसम्बर माह के प्रेरणादायी व्यक्तित्व (एक जीवन परिचय)	25-27
7.	दिसम्बर माह के महत्वपूर्ण दिवस	28-31
8.	चित्र दीर्घा (महाविद्यालय उपलब्धियाँ एवं गतिविधियाँ)	32-35
9.	कलाकृति अनुभाग	36-38
10.	कुछ अनुशंसित पुस्तकें	39
11.	देश दुनिया के कुछ रोचक तथ्य	40-41
12.	रोजगार समाचार	42



सम्पादकीय

जैसे ही शरद क्रतु के अंतिम पत्ते गिरते हैं और परिसर की बत्तियाँ टिमटिमाने लगती हैं, हम दिसम्बर की दहलीज पर खड़े हो जाते हैं- एक ऐसा महीना जो सार्वभौमिक रूप से प्रतिबिंब, उत्सव और नई शुरुआत की ओर देखने के लिए आमंत्रित करता है। “मानिला वाणी” का यह अंक महाविद्यालय जीवन में साल के अंत को परिभाषित करने वाले पुरानी यादों और प्रत्याशा के अनूठे मिश्रण को पकड़ने का लक्ष्य रखता है। इस संस्करण में, हमने उन लेखों का एक संग्रह तैयार किया है जो मौसम की भावना और हमारे छात्र समुदाय के विविध अनुभवों के साथ मेल खाते हैं।

जैसे ही दिसंबर की यह ठिठुरती शाम 2025 के कैलेंडर को समेट रही है, हमारा यह अंक एक गंभीर 'मंथन' का केंद्र बनकर आपके सामने है। यह समय केवल पीछे मुड़कर देखने का नहीं, बल्कि 2026 की संभावनाओं के ब्लूप्रिंट पर विचार करने का है। इस वर्ष हमने नीतिगत बदलावों की एक ऐसी लहर देखी जिसने भारत की वैश्विक साख को नई ऊँचाई दी, वहीं 'गोल्ड इकोनॉमी' के बदलते रुख ने हमें निवेश और सुरक्षा के प्रति नए दृष्टिकोण अपनाने पर मजबूर किया। विकास की इस तीव्र गति के बीच, जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों ने हमें प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी का अहसास कराया है। यहाँ हमें प्रेरणा मिलती है उत्तराखण्ड की पावन 'कुमाऊँनी परंपराओं' से, जो सदियों से पर्यावरण संरक्षण और सामुदायिक सौहार्द का जीवंत उदाहरण रही हैं। इन परंपराओं की सादगी और उन प्रेरक व्यक्तित्वों के संघर्ष की कहानियाँ, जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी सफलता के झंडे गाड़े, हमें यह हौसला देती हैं कि हम तकनीक और संस्कृति के मेल से एक बेहतर कल बुन सकें। आइए, 2026 के इस नए सफर की शुरुआत महज एक तारीख बदलने से नहीं, बल्कि एक नए विजन, एक नई ऊर्जा और अपने मूल्यों के संरक्षण के संकल्प के साथ करें। यह समय आत्म-मंथन का है, ताकि हम एक ऐसे भारत का निर्माण कर सकें जो आधुनिक भी हो और अपनी जड़ों से जुड़ा हुआ भी।

यह पत्रिका अविश्वसनीय प्रतिभा और जीवंत समुदाय का एक वसीयतनामा है जो हमारे कॉलेज की दीवारों के भीतर पनपता है। यह छात्रों के लिए जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचारों और विचारों को व्यक्त करने, रचनात्मकता और बौद्धिक कौशल को पोषित करने का एक मंच है।

हम पहले से ही आगामी मुद्दों के लिए विषयों पर विचार-मंथन कर रहे हैं। हम सभी छात्रों को आमंत्रित करते हैं कि वे भविष्य के संस्करणों में अपने लेखों, रेखाचित्रों या विचारों का योगदान करने और हमारे समुदाय में बातचीत को आकार देने में मदद करें। नए साल में आप क्या देखना चाहेंगे, इसके लिए हम आपकी प्रतिक्रिया और विचारों का स्वागत करते हैं।

सम्पादकीय समिति शांतिपूर्ण ब्रेक और एक पूर्ण अवकाश सीज़न के लिए अपनी शुभकामनाएँ देती है। जब हम इस अध्याय को बंद करते हैं और एक नए पृष्ठ को मोड़ते हैं तो आपको आराम और प्रेरणा दोनों के लिए समय मिल सकता है।

सम्पादकीय समिति:

डॉ० जितेन्द्र प्रसाद (प्रधान सम्पादक)
डॉ० शैफाली सक्सेना (सह-सम्पादक)

ଛାତ୍ର-ଛାତ୍ରୀ ଲୋକ

ଅନୁଭାବ



(1)

मेरी माँ

दिन हुआ है, रात भी होगी,
हे माँ कभी मैं तेरे साथ भी होंगी,
रातों में आप सबकी याद आती है,
कभी सुबह तो कभी शाम आती है।

ताह उम्र यूं न हो,
अपनों से हम दूर ने हों,
बिन बोले माँ का वह प्यार,
याद आता है वो राते आज रात।
असल में सबसे दूर हो गए हम,
खुद रोए खुद चुप हो गए हम।
दुआ करूँगी दम भी भी उसी दिन निकले,
जिस दिन आप लोग हमें मिलें।



बबीता

बी०एस-सी० पंचम सेमेस्टर

पहाड़ों का दर्द

ठण्डी हवा, हरी चोटियाँ,
अब भी वही नज़ारा है।
पर मन में क्यों उदासी है?
क्यों चीख रहा ये सारा है?
रोज नई इमारतें उठती,
कटते पेड़, कहाँ छाँव है?
पॉलिथीन का ढेर जमा है,
खो गया शांत सा गाँव है।
नदियों का जल हुआ मैला,
धुआँ-धुआँ हर राह हुआ।
ओ मानव! रोक ये विनाश,
कर ले अपनी ये भूल माफ।
वरना रुठ जाएगी प्रकृति,
बचेगा न सुख न साफ।
पर्यावरण बचाना है,
फिर से पहाड़ स्वर्ग बनाना है।
प्रकृति की सुन ले तू पुकार,
आओ, हम सब संकल्प करें।

शिवानी

बी०एस-सी० पंचम सेमेस्टर



मैं क्यों लिखती हूँ?

मैं लिखती हूँ अपने पहाड़ों के लिये,
 मैं अपने रीति-रिवाजों के लिए लिखती हूँ,
 मैं अपनी संस्कृति के लिए लिखती हूँ,
 मैं अपने पहाड़ों के जन-जीवन और आवास-निवास के लिए लिखती हूँ।

मैं लिखती हूँ अपने पूर्वजों की जमीन के लिए,
 मैं लिखती हूँ अपने दादा-दादी के दर्द के लिए,
 मैं लिखती हूँ अपने पूर्वजों और अपनी जन्मभूमि के लिए,
 मैं लिखती हूँ अपने पहाड़ों की खूबसूरती के लिए।

मैं लिखती हूँ अपने पहाड़ों की विलुप्ति बयां करने के लिए,
 मैं लिखती हूँ अपने पहाड़ों से खेती-बाड़ी खत्म होने के लिए,
 खत्म हो रहे यहाँ रीति-रिवाज,
 हो रहीं यहाँ एक से बढ़ कर एक आपदायें।

मैं क्यों लिखती हूँ?

आखिर क्यूँ न लिखूँ?

मीनू

बी०एस-सी० पंचम सेमेस्टर

धरती माँ का वरदान



वृक्षों की है हरी चादर, निर्मल जल की बहती धार,

पवन दे रही शुद्ध सांसें, यही है धरती का उपहार।

पहाड़ खड़े हैं मौन तपस्वी, सूर्य करे हर दिन सत्कार।

पक्षियों का मीठा कलरव, गूँज रहा है जग संसार।

पर हमने ही इसे भुलाया, स्वार्थ में अंधे बन गए,

काट दिए वो पेड़ पुराने, नदियाँ मैली कर गए।

छेद किया ओज़ोन कवच में, विष हवा में घोल दिया।

आने वाली पीढ़ी का, हमने बचपन छीन लिया।

अब जागो, ओ मानव जागो, समय नहीं है और गँवाने को,

हरियाली को वापस लाओ, प्राणवायु फिर से पाने को।

एक बीज तुम रोपो आज, तो कल शीतल छाँव पाओगे,

पर्यावरण बचेगा तभी, जब तुम खुद को बचाओगे।

प्राद्यापक

लेखा

अनुभाग

कुमाऊँनी लोक-गाथाएँ

लोक-संस्कृति का जीवंत

स्वर कुमाऊँ अंचल की लोक-गाथाएँ हिमालयी समाज की सांस्कृतिक स्मृति, धार्मिक आस्था और ऐतिहासिक अनुभवों का सशक्त माध्यम हैं। ये लोक-गाथाएँ केवल गीत या कथाएँ नहीं हैं, बल्कि कुमाऊँ के लोकजीवन की सामूहिक चेतना का जीवंत दस्तावेज़ हैं। लिखित इतिहास की सीमाओं के बीच लोक-गाथाओं ने ही इस क्षेत्र के अतीत, सामाजिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं को संरक्षित रखा है। लोक-साहित्य की परंपरा में कुमाऊँनी लोक-गाथाओं का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इनका विकास मौखिक परंपरा के माध्यम से हुआ है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी गाए और सुनाए जाने के कारण इनमें समय के साथ परिवर्तन भी हुआ, किंतु इनके मूल भाव, संरचना और उद्देश्य सुरक्षित रहे। यही कारण है कि कुमाऊँनी लोक-गाथाएँ आज भी लोकजीवन में उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी अतीत में थीं।

कुमाऊँ में लोक-गाथाओं के अनेक रूप प्रचलित हैं, जिनमें जागर, हुड़किया बौल, ख्याल तथा अन्य गीतात्मक कथाएँ प्रमुख हैं। इनमें जागर धार्मिक लोक-गाथा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण रूप माना जाता है। जागर में देवी-देवताओं की उत्पत्ति, उनकी शक्ति, न्यायप्रियता और लोक-रक्षा की कथाएँ गाई जाती हैं। यह सामान्यतः गात्रि में ढोल दमाऊ जैसे पारंपरिक वाद्य यंत्रों के साथ गाया जाता है। लोक-मान्यता है कि जागर के माध्यम से देवता जाग्रत होते हैं और भक्तों की समस्याओं का समाधान करते हैं। इस प्रकार जागर धार्मिक अनुष्ठान और लोक-कथा-दोनों का समन्वित रूप प्रस्तुत करता है।

हुड़किया बौल कुमाऊँ की वीर-गाथा परंपरा का प्रतिनिधि रूप है। इसमें स्थानीय वीरों, योद्धाओं, राजाओं और ऐतिहासिक संघर्षों का वर्णन मिलता है। इन गाथाओं के माध्यम से कुमाऊँ के जननायकों की वीरता, त्याग और स्वाभिमान को स्मरण किया जाता है। हुड़किया बौल न केवल युद्ध और शौर्य का आख्यान है, बल्कि यह क्षेत्रीय अस्मिता और सामूहिक गौरव का भी प्रतीक है। इन गाथाओं के माध्यम से लोक-समाज अपने नायकों को पीढ़ियों तक जीवित रखता है।

कुमाऊँनी लोक-गाथाओं में प्रेम, विरह और करुणा का पक्ष भी अत्यंत सशक्त रूप में अभिव्यक्त हुआ है। प्रेम-गाथाओं में सामाजिक बंधनों, वर्गीय असमानताओं, पारिवारिक दबावों और मानवीय संवेदनाओं का मार्मिक चित्रण मिलता है। विशेष रूप से स्त्री-जीवन की पीड़ा, प्रतीक्षा, त्याग और आत्मसंघर्ष इन गाथाओं को गहरी मानवीय संवेदना प्रदान करता है। ये गाथाएँ लोक-समाज की नैतिक चेतना और भावनात्मक गहराई को उजागर करती हैं।

भाषिक दृष्टि से कुमाऊँनी लोक-गाथाएँ सरल, प्रवाहपूर्ण और प्रतीकात्मक होती हैं। इनमें प्रकृति से जुड़े बिंब-पर्वत, नदियाँ, वन, ऋतुएँ-प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। स्थानीय शब्दावली, लोकोक्तियाँ और उपमान गाथाओं को अधिक प्रभावशाली और आत्मीय बनाते हैं। संगीत और नृत्य के साथ इनकी प्रस्तुति इन्हें सामूहिक लोक-अनुभव में परिवर्तित कर देती है, जहाँ श्रोता और गायक के बीच कोई स्पष्ट भेद नहीं रहता।

सामाजिक दृष्टि से कुमाऊँनी लोक-गाथाएँ लोक-समाज के नैतिक मूल्यों, धार्मिक विश्वासों और सामाजिक संरचना को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। ये गाथाएँ लोक-न्याय, कर्म, धर्म और मानवीय संबंधों की व्याख्या करती हैं। साथ ही, ये समाज को यह भी सिखाती हैं कि कठिन परिस्थितियों में धैर्य, साहस और सामूहिकता किस प्रकार जीवन को आगे बढ़ाती है।

आधुनिकता और वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण लोक-संस्कृति पर संकट अवश्य आया है, किंतु कुमाऊँनी लोक-गाथाएँ आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए हैं। आधुनिक मंचों, शोध संस्थानों और सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से इन गाथाओं का पुनर्पाठ और पुनर्प्रस्तुति हो रही है। यह प्रयास न केवल सांस्कृतिक संरक्षण की दृष्टि से आवश्यक है, बल्कि लोक-साहित्य के अकादमिक अध्ययन के लिए भी अत्यंत उपयोगी है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कुमाऊँनी लोक-गाथाएँ कुमाऊँ की सांस्कृतिक पहचान का मूल आधार हैं। ये गाथाएँ अतीत की स्मृति, वर्तमान की चेतना और भविष्य की सांस्कृतिक दिशा-तीनों को जोड़ती हैं। अतः इन लोक-गाथाओं का संरक्षण, संकलन और गहन अध्ययन समय की आवश्यकता है, ताकि यह समृद्ध लोक-परंपरा आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित और जीवंत रूप में पहुँच सके।

मन की मनमानी



हम सभी जानते हैं मन बहुत चंचल है, हम कितना भी इसे रोक लें ये भटकता ही है और ऐसा भटकता है कि अच्छे खासे व्यक्ति को कहीं का नहीं छोड़ता। 5 बजे कर अलार्म लगाकर उठते समय जो प्यार से बोले की बस 5 मिनट और, और 5 मिनट 5 मिनट बोलकर सीधा 8 बजा दे वो है हमारा मन। ये वही मन है जो समंदर जैसा शांत है पर समय आने पर सुनामी का रूप भी ले लेता है, व्यक्ति का सबसे बड़ा मित्र और सबसे बड़ा शत्रु उसका मन ही है दोस्त बनकर से सफलता की ऊँचाईयों तक पहुंचा देता है तो वहीं शत्रु बनकर जिंदगी तबाह कर देता है। अंग्रेजों के बाद शायद जिसने हमें अपना गुलाम बनाया है वो हमारा मन ही है, जितना मुश्किल अंग्रेजों से आजादी पाना था उससे कई लाख गुना मुश्किल अपने मन से आजादी पाना है। हम सोच भी नहीं सकते इतना शक्तिशाली है ये, ये चाहे तो राजा को रंक और रंक को राजा बना दे। पर हम इसकी शक्ति से अंजान है और इस पर काबू पाने के बदले इसके जाल में फँसते चले जाते हैं और वो सब कर बैठते हैं जो हमें कभी नहीं करना चाहिए। हमारी पांचों ज्ञानेन्द्रियों को पूरी तरह अपने वश में कर ये अपने मनमाने आचरण हमसे कराता है हमें क्या देखना है, क्या खाना है, किस चीज का स्पर्श करना है ये सब हमारा मन तय करता है हम चाहें तो ऐसी बातें सुन और देख सकते हैं जिससे ज्ञान प्राप्त हो और जो जिससे हमारा विकास हो, हम चाहे तो अच्छी चीजें खा सकते हैं, समय पर सोना-उठना कर सकते हैं पर हम चाह कर भी ये सब नहीं कर पाते क्योंकि हम अपने मन के गुलाम हैं हम वो नहीं करते जो हम चाहते हैं हम वो सब करते हैं जो हमारा मन हमसे कराता है। कुछ क्षण का लालच दिखाकर ये हमारी पूरी जिंदगी खराब कर देता है, यदि हम अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करना चाहे तो ये हमारी पांचों ज्ञानेन्द्रियों को वश में कर हमसे छल करता है (जैसे- कुछ खाने का मन, घुमने का मन, सोने का मन, कुछ देखने का मन, किसी से बात करने मन, किसी अन्य कार्य को करना,आदि) ये कोशिश करता है कि हम अपने लक्ष्य से भ्रमित हो जाएं और इसकी माया में उलझ कर रह जाएं।

यदि हम अपने मन पर लगाम लगा दें इसे अपने काबू में करें तो शायद हमारे जीवन की आधे से ज्यादा परेशानियां वैसे ही खत्म हो जाएँगी। जब हम किसी दुर्व्यस्न या बुरी आदतों में पड़ते हैं तो एक बार सोच जरूर आती है कि यह गलत है पर हमारा मन हमें उत्तेजित करता है कि बस एक बार उस काम को कर लिया जाए और बस हम मन के जाल में फँस जाते हैं, उस एक क्षण के चलते हम हमेशा के लिए उस बुरी प्रवृत्ति में पड़ जाते हैं। हमें कुसंगति और बुरी आदतों में पड़कर गंदी नाली में गिरे रहना है या सफलता की ऊँचाईयों को छूना है ये हमारा मन ही तय करता है यदि इस चंचल, लालची, चालाक और शक्तिशाली मन को वश में कर लिया जाए तो व्यक्ति पूरे संसार पर विजय प्राप्त कर सकता है। हमें अपने मन को मनमानी करने से रोकना होगा इसे नैतिक मूल्यों, कृत्यों और संस्कारों में बांध कर रखना होगा। हमारे मन के मनचाहे आचरण ही हमें अच्छा या बुरा, सफल या असफल व्यक्ति बनाते हैं, संसार के प्रत्येक व्यक्ति के लिए सबसे बड़ी जंग है अपने मन से जीतना, जो व्यक्ति अपने मन से जीत जाता है उसे दुनिया में कोई नहीं हरा सकता या शायद उसके बाद संसार में कोई लड़ाई बाकी ही नहीं रहती।

मानवीन बनाम मन

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के शोर में मानवीय रचनात्मकता की खामोश क्रांति

आजकल एक शब्द बार-बार कानों में गूंजता है—

AI यानी 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस'। कुछ साल पहले तक यह विज्ञान कथाओं (Science Fiction) का हिस्सा था,



लेकिन आज यह हमारे छात्रों के असाइनमेंट से लेकर हमारी सुबह की खबरों तक, हर जगह घुसपैठ कर चुका है। दिसंबर की इस सर्द हवा में, जब हम 2026 की दहलीज पर खड़े हैं, एक बहुत बड़ा सवाल हमारे सामने खड़ा है। यह सवाल किसी सॉफ्टवेयर के अपडेट होने का नहीं है, न ही यह सवाल नौकरियों के जाने का है (हालाँकि वह भी एक डर है)। यह सवाल उससे कहीं ज्यादा गहरा और अस्तित्ववादी है। सवाल यह है कि क्या मशीनें हमारी उस 'आत्मा' को चुरा लेंगी जिसे हम 'रचनात्मकता' या Creativity कहते हैं? एक साहित्य और मानवीय संवेदनाओं का शिक्षक होने के नाते, यह लेख मेरे लिए सिर्फ शब्दों का जाल नहीं, बल्कि एक आत्म-मंथन है। आइए, इस लेख में हम उस भविष्य की परतें खोलें जहाँ सिलिकॉन चिप्स और मानव हृदय के बीच ढंग चल रहा है।

अध्याय 1: रचनात्मकता क्या है? (एल्गोरिदम बनाम अनुभव)

इससे पहले कि हम भविष्य की बात करें, हमें वर्तमान की एक गलतफहमी को दूर करना होगा। आज हम ChatGPT या Midjourney द्वारा बनाई गई किसी कविता या पेटिंग को देखकर वाह-वाह कर रहे हैं। हम कह रहे हैं, "देखो, AI कितना रचनात्मक है!" लेकिन यहीं हम चूक रहे हैं। रचनात्मकता (Creativity) क्या है? क्या यह सिर्फ शब्दों को व्याकरण के हिसाब से सही क्रम में जमा देना है? क्या यह रंगों को कैनवास पर पोत देना है? नहीं। मानवीय रचनात्मकता 'डेटा' का खेल नहीं है, यह 'दर्द' का खेल है। जब सुमित्रानंदन पंत ने "वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान" लिखा होगा, तो उन्होंने किसी डेटाबेस से शब्द नहीं उठाए थे। उन्होंने पीड़ा महसूस की थी। जब निराला ने 'वह तोड़ती पत्थर' लिखी, तो उन्होंने धूप में जलती उस महिला को अपनी आँखों से देखा था, उसके पसीने की गंध को महसूस किया था।

AI के पास क्या है? उसके पास पूरी दुनिया का साहित्य है, करोड़ों पेटिंग्स का डेटा है। वह 'पैटर्न' पहचान सकता है। वह शेक्सपियर की शैली की नक्कल कर सकता है, गालिब के अंदाज में शेर कह सकता है। लेकिन क्या AI का कभी दिल टूटा है? क्या उसने कभी बेरोजगारी की हताशा महसूस की है? क्या उसे कभी पहाड़ के पीछे ढूबते सूरज को देखकर अकारण रोना आया है? जवाब है—नहीं। इसलिए, भविष्य में रचनात्मकता की परिभाषा बदलेगी। 'उत्पादन' (Production) और 'सृजन' (Creation) के बीच की लकीर गहरी होगी। AI 'उत्पादन' करेगा—तेजी से, सस्ता और त्रुटिहीन। लेकिन मनुष्य 'सृजन' करेगा—जिसमें खामियां होंगी, लेकिन उसमें धड़कन भी होगी। भविष्य की रचनात्मकता 'परफेक्शन' के बारे में नहीं, बल्कि 'कनेक्शन' (जुड़ाव) के बारे में होगी।

अध्याय 2: औसत दर्जे का खतरा (The Trap of Mediocrity)

एक शिक्षक के रूप में, मुझे सबसे बड़ा डर यह नहीं है कि AI हमारे छात्रों से होशियार हो जाएगा। मुझे डर इस बात का है कि हमारे छात्र AI पर इतना निर्भर हो जाएंगे कि वे 'औसत' (Average) बनकर रह जाएंगे। इसे थोड़ा तकनीकी रूप से समझते हैं। AI मॉडल (LLMs) काम कैसे करते हैं? वे इंटरनेट पर मौजूद अरबों शब्दों को पढ़ते हैं और भविष्यवाणी करते हैं कि अगला शब्द क्या होना चाहिए। वे अनिवार्य रूप से 'सामूहिक औसत' (Collective Average) निकाल रहे हैं। जब आप AI से एक निबंध लिखने को कहते हैं, तो वह आपको वह लिखकर देता है जो सांख्यिकीय रूप से (statistically) सबसे सही है। यानी, वह आपको वह नहीं देगा जो 'अनोखा' है, वह आपको वह देगा जो 'आम' है। भविष्य में, हम रचनात्मकता की दुनिया में दो वर्ग बनते देखेंगे:

- **कंटेंट के उपभोक्ता और रि-साइकिलर्स:** यह वह बड़ा वर्ग होगा जो AI टूल्स का इस्तेमाल करके फटाफट कंटेंट बनाएगा। चाहे वह कॉलेज का प्रोजेक्ट हो, विज्ञान की कॉपी हो या सोशल मीडिया की रील। यह सब देखने में अच्छा लगेगा, व्याकरण सही होगा, लेकिन इसमें "आत्मा" नदारद होगी। यह एक 'मैकडॉनल्ड्स बर्गर' जैसा होगा—हर जगह एक जैसा स्वाद, पेट भरने वाला, लेकिन घर के खाने जैसा सुकून नहीं।
- **सच्चे रचनाकार (The True Creators):** यह एक छोटा समूह होगा। वे लोग जो AI का इस्तेमाल तो करेंगे, लेकिन उसे अपनी बैसाखी नहीं बनाएंगे। वे वे लोग होंगे जो उन विचारों को सोच पाएंगे जो इंटरनेट पर मौजूद ही नहीं हैं।

कल्पना कीजिए, अगर 2026 में हर कोई AI से प्रेम पत्र लिखवा रहा है, तो हर प्रेम पत्र एक जैसा होगा। ऐसे में, वह व्यक्ति जो अपने टूटे-फूटे शब्दों में, अपनी गंदी हैंडराइटिंग में एक असली पत्र लिखेगा, वही सबसे बड़ा और सच्चा रचनाकार माना जाएगा। भविष्य में 'अपूर्णता' (Imperfection) ही 'प्रीमियम' बन जाएगी।

अध्याय 3: क्या AI रचनात्मकता का अंत है या नया पुनर्जागरण?

इतिहास गवाह है कि जब भी कोई नई तकनीक आती है, तो पुराने कलाकारों को लगता है कि दुनिया खत्म हो गई। 19वीं सदी में जब कैमरा (Camera) आया, तो चित्रकारों (Painters) में हड़कंप मच गया। उन्हें लगा कि अब पेंटिंग कौन खरीदेगा जब मशीन एक सेकंड में हू-ब-हू तस्वीर खींच सकती है? यथार्थवाद (Realism) खतरे में था। लेकिन क्या पेंटिंग खत्म हो गई? नहीं। बल्कि, कैमरे के आने से पेंटिंग 'आजाद' हो गई। चित्रकारों ने कहा, "ठीक है, अगर कैमरा यथार्थ दिखा सकता है, तो हम वह दिखाएंगे जो कैमरा नहीं देख सकता—हम भावनाएं दिखाएंगे।" और इसी तरह 'इंप्रेशनिज्म' (Impressionism) और 'एब्स्ट्रैक्ट आर्ट' (Abstract Art) का जन्म हुआ। पिकासो या वैन गॉग जैसे कलाकार इसलिए पैदा हुए क्योंकि उन्हें यथार्थ की नकल करने की मजबूरी से कैमरे ने मुक्त कर दिया था। AI के दौर में भी मानवीय रचनात्मकता के साथ यही होने वाला है।

भविष्य में, जो काम 'तकनीकी' या 'दोहराव' वाले हैं (जैसे कोडिंग के बेसिक हिस्से, ग्राफिक डिजाइन के टेम्पलेट, या खबरों का अनुवाद), वे सब AI करेगा। इससे मनुष्य का दिमाग उन ऊंची चीजों के लिए आजाद होगा जिनके लिए हमें पहले वक्त नहीं मिलता था। हम एक नए 'पुनर्जागरण' (Renaissance) की ओर बढ़ सकते हैं। सोचिए, एक लेखक जो पहले वर्तनी (spelling) और व्याकरण सुधारने में घंटों लगाता था, अब वह सिर्फ कहानी के दर्शन और पात्रों के मनोविज्ञान पर ध्यान देगा। एक आर्किटेक्ट अब नक्शा बनाने में वक्त नहीं गंवाएगा, बल्कि यह सोचेगा कि उस इमारत में रहने वाला इंसान कैसा महसूस करेगा। भविष्य "Man vs Machine" का नहीं, बल्कि "Man + Machine" का है। इसे हम 'सेंटौर मॉडल' (Centaur Model) कहते हैं—आधा इंसान, आधा घोड़ा। जो कलाकार AI को एक 'औजार' (Tool) की तरह इस्तेमाल करना सीख जाएगा, न कि 'मालिक' की तरह, वही भविष्य का राजा होगा।

अध्याय 4: शिक्षा और मौलिकता का संकट

कॉलेज मैगजीन के इस लेख में अगर मैं शिक्षा की बात न करूँ, तो यह अधूरा रहेगा। हम एक ऐसे दौर में हैं जहाँ 'होमवर्क' का मतलब बदल गया है। मेरे पास अक्सर छात्र आते हैं, वे AI से जेनरेट किया हुआ उत्तर दिखाते हैं और पूछते हैं, "सर, क्या यह सही है?" वह उत्तर तथ्यात्मक रूप से सही होता है, लेकिन उसमें 'छात्र' गायब होता है। उसमें वह भोलापन नहीं होता जो सीखने की प्रक्रिया में आता है। उसमें वह गलती नहीं होती जिससे इंसान सीखता है। भविष्य की रचनात्मकता इस बात पर निर्भर करेगी कि हम अपनी शिक्षा प्रणाली को कैसे बदलते हैं। अगर हम अभी भी छात्रों से वही पुराने सवाल पूछेंगे— "1857 की क्रांति के कारण बताओ"—तो AI हमेशा उनसे बेहतर उत्तर देगा। हमें अपने सवाल बदलने हांगें। हमें पूछना होगा—"अगर तुम 1857 में होते, और तुम्हारे पास आज की तकनीक होती, तो तुम क्या अलग करते?" AI 'क्या' (What) और 'कैसे' (How) का जवाब दे सकता है। लेकिन 'क्यों' (Why) और 'कैसा महसूस हुआ' (How did it feel) का जवाब सिर्फ एक इंसान दे सकता है। भविष्य में रचनात्मकता का मतलब 'स्मृति' (Memory) नहीं होगा। पहले जिसे ज्यादा याद रहता था, वह विद्वान था। अब सब कुछ Google और AI के पास है। अब विद्वान वह होगा जो दो अनजानी चीजों को जोड़कर (Connect) कुछ नया बना सके। 'Synthesis' (संश्लेषण) ही नई रचनात्मकता है।

अध्याय 5: भारतीय संदर्भ और भाषार्द्ध रचनात्मकता

भारत, और विशेषकर हमारे जैसे क्षेत्र (उत्तराखण्ड), जहाँ बोलियों और लोक-संस्कृति का भंडार है, वहाँ AI का प्रभाव बड़ा दिलचस्प होगा। अभी तक इंटरनेट पर अंग्रेजी का दबदबा है। AI भी अंग्रेजी में सबसे अच्छा काम करता है। लेकिन हिंदी और हमारी लोक-भाषाओं में जो 'लोच' (Flexibility) है, जो मुहावरे हैं, उन्हें पकड़ना मशीन के लिए मुश्किल है। क्या कोई AI कभी फणीश्वरनाथ रेणु की आंचलिकता को पकड़ सकता है? क्या वह पहाड़ी जीवन की कठिनाइयों को उसी शिद्धत से लिख सकता है जैसे रस्किन बॉन्ड या शैलेश मटियानी ने लिखा? शायद नहीं। लेकिन यहाँ एक खतरा भी है। अगर हम अपनी भाषाओं में डिजिटल कंटेंट नहीं बनाएंगे, तो AI हमारी संस्कृति को 'अंग्रेजी के चश्मे' से देखेगा और उसी का अनुवाद हमें परोसेगा। इससे हमारी मौलिक सोच (Original Thinking) दूषित हो सकती है। हमारी रचनात्मकता का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम अपनी भाषा और अपनी जड़ों को कितना पकड़ कर रखते हैं। मशीन को हमारी संस्कृति सीखने दें, लेकिन मशीन को हमारी संस्कृति बदलने न दें।

अध्याय 6: नैतिक द्वंद्व और "सत्य" की खोज

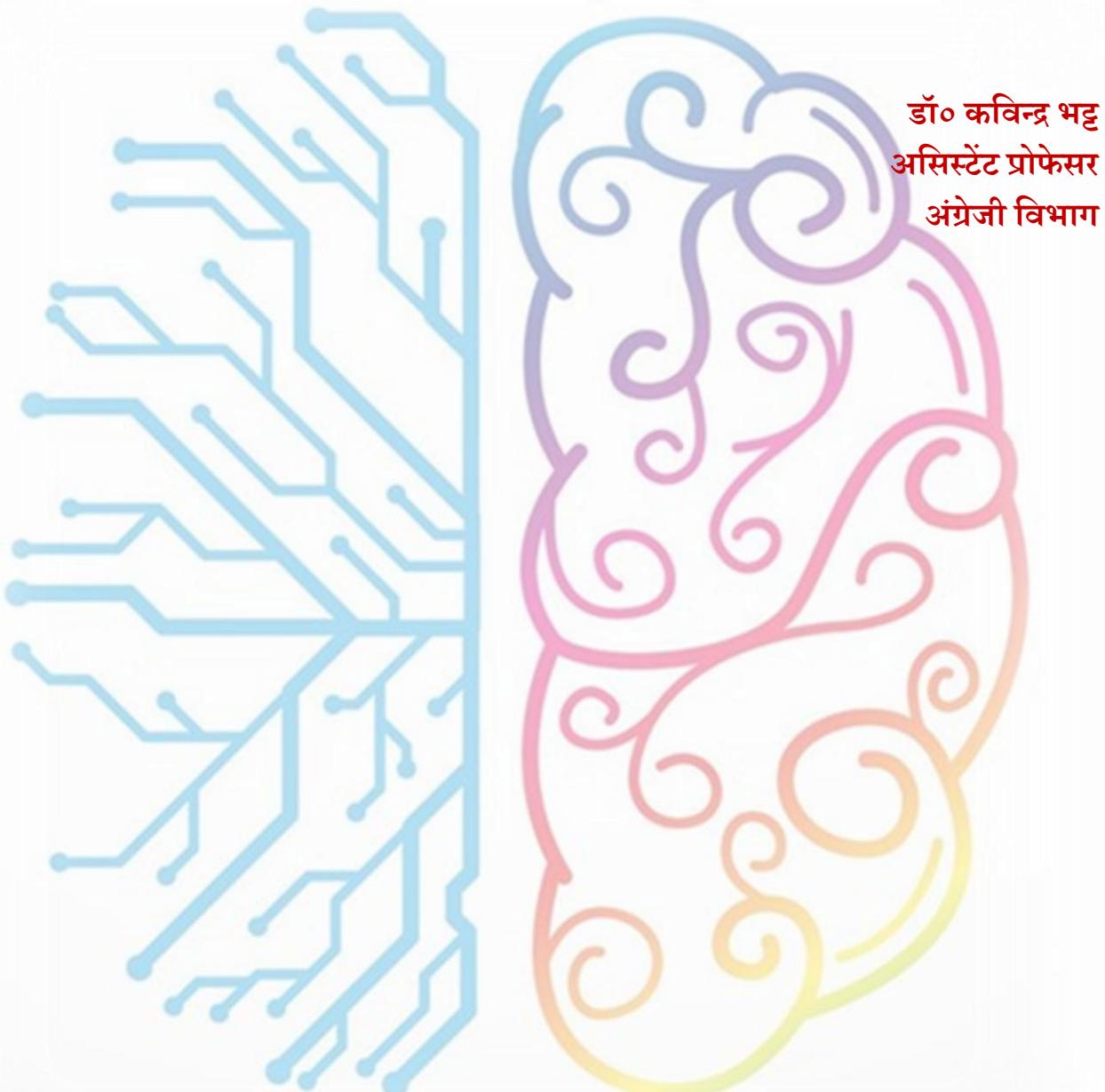
रचनात्मकता का एक गहरा संबंध 'सत्य' (Truth) से है। कला झूठ का सहारा लेकर भी सच कहती है। लेकिन AI के दौर में 'Deepfakes' और 'Fake News' ने रचनात्मकता को एक हथियार बना दिया है। भविष्य में, एक 'मानवीय स्पर्श' (Human Touch) ही सत्य की कसौटी बनेगा। जब आप किसी वीडियो को देखेंगे या किसी लेख को पढ़ेंगे, तो आपके मन

में एक संदेह हमेशा रहेगा—"क्या यह असली है?" यहीं पर मानवीय रचनात्मकता का सबसे बड़ा मूल्य उभर कर आएगा—विश्वास (Trust)। लोग उन लेखकों, उन पत्रकारों और उन कलाकारों पर भरोसा करेंगे जो अपनी पहचान, अपने चेहरे और अपनी नैतिकता के साथ सामने आएंगे। भविष्य में 'एनोनिमस' (गुमनाम) रहना मुश्किल होगा। आपकी 'मानवीय साख' (Human Credibility) ही आपकी रचनात्मकता का आधार होगी।

निष्कर्ष: डरें नहीं, बस 'इंसान' बने रहें

अंत में, मैं अपने प्रिय छात्रों और पाठकों से सिर्फ इतना कहना चाहता हूँ। AI एक बाढ़ की तरह है। यह आएगा, और बहुत कुछ बहा कर ले जाएगा—पुरानी नौकरियां, पुराने तरीके, और औसत दर्जे का काम। लेकिन बाढ़ के बाद की जमीन बहुत उपजाऊ होती है। भविष्य उन लोगों का है जो Curiosity (जिज्ञासा), Empathy (संवेदना) और Critical Thinking (आलोचनात्मक सोच) को नहीं छोड़ेंगे। मशीनें हमें उत्तर दे सकती हैं, लेकिन प्रश्न पूछना इंसान का काम है। मशीनें गणना कर सकती हैं, लेकिन परवाह (Care) करना इंसान का काम है। रचनात्मकता मरेगी नहीं, यह बस अपना रूप बदल रही है। यह 'हाथों की कारीगरी' से हटकर 'दिमाग और दिल की जुगलबंदी' की तरफ जा रही है। तो अगली बार जब आप कुछ लिखने बैठें, या कोई चित्र बनाने बैठें, तो यह चिंता न करें कि AI इसे आपसे जल्दी बना सकता है। यह सोचें कि क्या AI इसे उस 'एहसास' के साथ बना सकता है जो आप महसूस कर रहे हैं? अपने मानवीय अनुभवों को गले लगाइए। अपनी गलतियों को प्यार कीजिए। अपने टूटे हुए दिल और अपनी बिखरी हुई सोच को अपनी ताकत बनाइए। क्योंकि यही वह चीज है जो सिलिकॉन की किसी भी चिप में कभी नहीं मिलेगी।

यही भविष्य है। और यह भविष्य सुरक्षित है, जब तक हम 'मशीन' बनने की होड़ में 'इंसान' होना न भूल जाएं।



स्वर्ण ज्वर

क्यों सोना ₹1.35 लाख की सीमा को पार कर रहा है?

भारतीय बाजारों में "मिडास टच" (पारस का स्पर्श) लौट आया है, लेकिन एक ऐसी कीमत के साथ जो कभी अकल्पनीय थी। वर्ष 2025 में, सोने की चमक ने अन्य सभी परिसंपत्तियों (assets) को पीछे छोड़ दिया है। 24-कैरेट सोना रिकॉर्ड तोड़ते हुए ₹1,35,000 प्रति 10 ग्राम के ऊपर कारोबार कर रहा है। जहाँ आम आदमी ज्वेलरी स्टोर की खिड़कियों को विस्मय के साथ देख रहा है, वहाँ वित्तीय जगत एक ऐतिहासिक बदलाव का गवाह बन रहा है। यह केवल मौसमी उछाल नहीं है; यह एक वैश्विक घटना है। आइए जानते हैं उस असली कहानी को कि दुनिया अचानक इस पीली धातु की दीवानी क्यों हो गई है।

तजी का विश्लेषण: मांग में विस्फोट क्यों हो रहा है?

सोने के "सवा लाख" और उससे आगे के सफर की पटकथा वैश्विक अस्थिरता और आर्थिक रणनीति की स्थाही से लिखी गई है।

- 1. दुनिया का सर्वश्रेष्ठ 'पैनिक रूम':** वर्ष 2025 में, मध्य पूर्व से लेकर पूर्वी यूरोप तक के भू-राजनीतिक झटकों ने वैश्विक शेयर बाजारों को रोलर-कोस्टर बना दिया है। जब दुनिया संकट में होती है, तो निवेशक "सुरक्षित निवेश" (Safe-Haven) की ओर भागते हैं। सोना इकलौती ऐसी मुद्रा है जिसे कोई सरकार छाप नहीं सकती और कोई युद्ध इसका मूल्य कम नहीं कर सकता। यह संपत्ति के लिए वैश्विक "पैनिक रूम" बन गया है।
- 2. केंद्रीय बैंक हैं नए बड़े खरीदार:** एक पल के लिए भारतीय शादियों की बड़ी खरीदारी को भूल जाइए; असली "बड़े खरीदार" अब केंद्रीय बैंक हैं। भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के साथ-साथ चीन और तुर्की के केंद्रीय बैंक अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम कर रहे हैं और सोने का भंडारण (hoarding) कर रहे हैं। 2025 की तीसरी तिमाही तक, केंद्रीय बैंकों की खरीद में पिछले वर्ष की तुलना में 10% से अधिक की वृद्धि हुई है, जिससे आपूर्ति में कमी आई है और कीमतें आसमान छू रही हैं।
- 3. 'डॉलर' का संकट और फेडरल रिजर्व:** जैसे ही अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने ब्याज दरों को कम करने का संकेत दिया, अमेरिकी डॉलर ने अपनी धार खो दी। ऐतिहासिक रूप से, जब डॉलर गिरता है, तो सोना चढ़ता है। यह उल्टा संबंध वर्तमान में पूरी तरह से प्रभावी है, जिससे सोना वैश्विक फंड मैनेजरों के लिए सबसे लाभदायक विकल्प बन गया है।
- 4. डिजिटल गोल्ड रश:** वर्ष 2025 की मांग की कहानी इसलिए अनोखी है क्योंकि लोग इसे खरीदने के तरीके बदल रहे हैं। जेन जेड (Gen Z) और मिलेनियल्स अब पारंपरिक सुनारों के पास कतार में नहीं खड़े होते; वे केवल बटन क्लिक कर रहे हैं। गोल्ड ईटीएफ (ETF) और डिजिटल गोल्ड प्लेटफॉर्म के वॉल्यूम में 30% की वृद्धि देखी गई है, जिससे सोने में निवेश करना पिज्जा ऑर्डर करने जितना आसान हो गया है।
- 5. रुपये का कारक:** भारतीय खरीदारों के लिए यह दर्द दोगुना है। डॉलर के मुकाबले रुपये पर दबाव के कारण, सोने के आयात की लागत (भारत अपनी आवश्यकता का लगभग 86% आयात करता है) आसमान छू गई है। हम केवल सोने के लिए भुगतान नहीं कर रहे हैं; हम "मुद्रा कर" (currency tax) का भुगतान भी कर रहे हैं।

आगे की राह: क्या ₹1.5 लाख अगला पड़ाव है?

वित्तीय विशेषज्ञ अब यह नहीं पूछ रहे हैं कि क्या सोना बढ़ेगा, बल्कि यह कि कितना बढ़ेगा। यदि मुद्रास्फीति और भू-राजनीतिक तनाव का वर्तमान मिश्रण जारी रहता है, तो विश्लेषकों का अनुमान है कि सोना 2026 के मध्य तक ₹1.5 लाख से ₹1.75 लाख के स्तर को आसानी से पार कर सकता है।

निष्कर्ष

2025 में, सोना केवल "दादी-नानी के गहने" से बदलकर एक "रणनीतिक पावरहाउस" बन गया है। चाहे आप सुरक्षा की तलाश में हों या उच्च रिटर्न की, स्वर्ण युग आधिकारिक तौर पर आ चुका है।

कोहरे में लिपटा कॉलेज

धुंध का चोला,
ओढ़े कॉलेज आज।

दीवारें भीगी, चुप खड़ी,
जैसे सुन रही हो कोई राज़।

पेड़ हैं धुंधले भूत से,
शाखाएँ फैली, डरी-डरी।

कदम दबे-दबे, छात्र कम,
बातें मरी-मरी।

सीढियाँ फिसलन भरी,
छात्र धीरे-धीरे चढ़ते, उतरते।

चाय की दुकान पर धुंआ,
अलाव के किनारे, एक उम्मीद की गर्म लकीर।

कोहरा एक आवरण,
दिन को भी रात जैसा बनाए।

फिर भी, जिन्दगी चलती रहती है,
कॉलेज के भीतर, कोहरे के घेरे में।

(स्वरचित: द्वारा डॉ. शैफाली सक्सेना)

MAGLEV TRAINS

Because Wheels Are So Last Century



Human progress has always been about moving faster—from walking to wheels, from steam engines to bullet trains. And now, science has taken a bold step forward and said, “*Why touch the track at all?*” That bold idea gave birth to **Maglev trains**, the rebels of modern transportation that prefer floating over rolling.

Floating Is the New Rolling

Maglev is short for **Magnetic Levitation**, which sounds complicated until you remember playing with magnets as a kid. You know how two similar poles push each other away? Maglev trains use that same idea—just with much stronger magnets and far more engineering brilliance. The train hovers slightly above the track, never actually touching it. No wheels. No friction. Just smooth, silent motion that feels like the future sneaked into the present without asking permission.

Powered by Pure Physics (and Flexing Rights)

Maglev systems use electromagnets placed both on the train and the guideway. Some magnets lift the train; others push and pull it forward. The entire journey is a carefully choreographed electromagnetic dance—no stumbling, no slipping. For physics students, this is electromagnetism showing off. For everyone else, it’s basically magic with equations.

Speed That Makes Time Nervous

Traditional trains are fast. Maglev trains are “**blink and you missed the city**” fast. They can exceed **600 km/h** in experimental runs and still maintain incredible stability.

At these speeds:

- Breakfast in one city, lunch in another, long journeys feel like short naps and Your playlist barely gets to the third song.

Silent, Smooth, and Slightly Show-Offish

“If time travel ever becomes real, Maglev trains would probably already be waiting at the station.”

One of the coolest things about Maglev trains is how **quiet** they are. Without wheels clanking against rails, the ride feels more like floating through air than racing on steel.

Less vibration means:

- No coffee spills, No dramatic shaking and No “Is this train about to fall apart?” moments.

Saving the Planet, One Levitation at a Time

Maglev trains are not just fast—they’re **environmentally friendly**. Reduced friction means better energy efficiency and lower emissions. Plus, fewer moving parts mean less maintenance and longer-lasting systems.

In a world struggling to balance development and sustainability, Maglev trains quietly whisper, “*Why not both?*”

So... Why Isn't Every Train a Maglev Yet?

Here’s the plot twist: **money**. Maglev systems need entirely new infrastructure, custom tracks, and advanced technology. You can’t just upgrade old railway lines and call it a day.

But history has shown us that today’s “too expensive” often becomes tomorrow’s “why didn’t we do this sooner?”

A Glimpse of What's Ahead

Maglev trains represent more than just a new way to travel—they represent human ambition. They show how creativity, science, and determination can reshape something as familiar as a train. As technology continues to evolve, these floating marvels may soon redefine how we think about distance, speed, and travel itself. After all, the future doesn’t always come rolling in—it sometimes arrives **hovering just above the track**.

THE 100-METER MISTAKE

How the Aravalis Were Almost Legislated Out of Existence

(12)

It was a Monday morning during the winter season—December 29, 2025, to be precise—when the Supreme Court of India did something it rarely does. It pressed the pause button on itself.

For the last month, a quiet panic had been spreading among environmentalists, geologists, and anyone

who understands why Delhi isn't buried under sand dunes yet. On November 20, 2025, the Court had accepted a new, deceptively simple definition of what constitutes a "hill" in the Aravali range. The definition relied on a metric that sounded scientific but was ecologically absurd: for a landform to be an "Aravali hill," it had to be at least 100 meters high.

If you are a student of literature or history, you might ask: "What's in a number?" In this case, everything. That single number—100 meters—was about to wipe nearly 90% of the Aravali range off the legal map. It was a "death warrant" for the shrub forests, the lower ridges, and the wildlife corridors that don't quite meet the height requirement but perform the exact same ecological function as the taller peaks.

Then came the stay order. The Vacation Bench, led by Chief Justice Surya Kant, stepped in and acknowledged that the previous order might have created a "structural paradox." They admitted that by defining the hills too narrowly, we might be opening the doors to the very destruction we are trying to prevent.

As we head into 2026, with the next hearing scheduled for late January, it is crucial for us—students, faculty, and citizens—to understand exactly what happened, why it matters, and why this legal battle is the only thing standing between us and the Thar Desert.

The "Green Wall" and the Definition Game

To understand the legal mess, you have to understand the geography. The Aravalis are not just a collection of rocks; they are a geological shield. Spanning Gujarat, Rajasthan, Haryana, and Delhi, they act as a barrier checking the eastward march of the Thar Desert. Without them, the dust storms that choke Delhi and Western Uttar Pradesh would be infinitely worse. They are also the primary groundwater recharge zone for the entire National Capital Region.

For decades, the legal protection of these hills has relied on a patchwork of Supreme Court orders (mostly from the *M.C. Mehta* and *Godavarman* cases) because the states—especially Haryana and Rajasthan—have been reluctant to classify them as "forests" in government records. Forest land cannot be mined easily. "Revenue land" or "Gair Mumkin Pahar" (uncultivable hills) can be.

The conflict came to a head last year when the Court asked for a uniform definition. A committee appointed by the Ministry of Environment, Forest and Climate Change (MoEF&CC) came up with the "100-meter" criteria.

Here is what the committee proposed:

- **Height:** Only a hill 100 meters or higher above the local ground level counts.
- **Proximity:** Only hills within 500 meters of each other count as a "range."

On the surface, it looks like a standard classification. But nature doesn't work in discrete, vertical blocks. A leopard walking from Sariska to Delhi doesn't check if the



Aravalis



(13)

hill it is walking on is 99 meters or 101 meters high. The water that seeps into the ground doesn't discriminate based on elevation.

The November Shock

When the Supreme Court accepted this report on November 20, 2025, the implications were immediate and terrifying.

According to data that surfaced from the Forest Survey of India (FSI) and independent ecological groups, the new definition meant that out of 12,081 identified hill formations in Rajasthan, only about 1,048 would actually qualify as "Aravali." That is a massive exclusion.

Suddenly, thousands of smaller hills—the ones that hold the soil together and channel rainwater—were technically "not Aravali." If they aren't Aravali, they aren't protected by the specific bans on mining that apply to the range. They become just "land." And land in this region is worth billions if you can quarry it for stone or build high-rises on it.

The "proximity" rule was equally dangerous. If two protected hills are separated by a gap of 600 meters (just over the 500-meter limit), the land in between loses protection. This creates what the Supreme Court later called a "regulatory lacuna." Miners could legally blast away the valleys and smaller connectors, leaving the protected 100-meter peaks as isolated islands in a sea of dust. An island ecosystem is a dying ecosystem.

The December U-Turn: A Victory for Logic

The weeks following the November order saw a massive mobilization. The "Save Aravali" campaign went into overdrive. Environmental lawyers argued that the Court had essentially been misled by a technocratic definition that ignored ecology.

The argument that seemed to stick was the "Structural Paradox."

On December 29, the Vacation Bench paused the whole process. Their reasoning was fascinatingly candid. They noted that the "100-meter norm" might be scientifically unsound. The Bench asked a poignant question: *Does excluding the lower hills essentially kill the higher hills?* If you erode the base and the surroundings, can the peak survive?

The Court has now ordered the constitution of a "High-Powered Committee" (yes, another one) to look at the issue holistically. They have explicitly paused any new mining leases. They have asked for a "Management Plan for Sustainable Mining" (MPSM) similar to the one used in the Saranda forests of Jharkhand.

But here is the catch: "Sustainable Mining" in the Aravalis is often an oxymoron. You cannot sustainably remove a hill that is protecting you from a desert. Once it's gone, it's gone. The Saranda model focuses on "inviolate zones" (no-go areas) and "conservation zones." The fear is that the government might still try to carve out "sustainable" zones in the Aravalis where the forest cover is thin, ignoring the fact that the rock itself is the necessary resource.

Why This Matters to Us

As an Assistant Professor observing this from Uttarakhand, where we have our own fragile relationship with mountains, the Aravali case is a warning. It shows how easily "definitions" can be weaponized against nature.

If the 100-meter rule had stuck, we would have seen a frenzy of mining activity in early 2026. The dust load in the air—already at hazardous levels—would have spiked. The groundwater tables in Gurgaon, Faridabad, and Jaipur, which are already critical, would have collapsed further.

This isn't just about saving leopards or trees. It is about the "carrying capacity" of Northern India. We are pushing the land to a point where it literally cannot support human habitation.

The Road Ahead

The stay order is a relief, but it is temporary. The next hearing is on January 21, 2026. The government is likely to push back, arguing that they need materials for construction and infrastructure—the "development" argument. They will say that the 100-meter rule was practical.

Our hope lies in the new committee. We need a definition of the Aravalis that is **geological**, not just topographical. If it is part of the ancient fold mountain system, it is Aravali. Period. Height shouldn't matter.

As we edit this magazine issue, the hills are safe. But they are only safe because a few judges decided to take a second look during their winter break. That is a fragile shield for something so vital. We need a law, not just a court order, that recognizes the Aravalis for what they are: our lifeline.

References & Further Readings

1. *M.C. Mehta v. Union of India* (The ongoing monitoring of Aravali mining).
2. Supreme Court Order dated Nov 20, 2025 (Accepting the 100m definition).
3. Supreme Court Order dated Dec 29, 2025 (Staying the Nov 20 order).
4. Forest Conservation Amendment Act, 2023 (The legislative context for these definition changes).
5. Reports from the *Forest Survey of India* regarding hill density in Rajasthan.

Dr. Kavinder Bhatt
Assistant Professor
Department of English



CLIMATE CHANGE

The Reality We Can No Longer Ignore



Climate Change is no longer a distant threat discussed only in scientific conferences or international summits. It is a lived reality, unfolding around us every day. From record-breaking heatwaves and unpredictable rainfall to melting glaciers and rising sea levels, the planet is sending us clear warning signals. The current situation of climate change demands urgent attention, especially from the youth, who will inherit the consequences of today's actions.

At its core, climate change refers to long-term shifts in temperature and weather patterns. While such changes can occur naturally, the current pace of global warming is largely driven by human activities. The burning of fossil fuels like coal, oil, and gas for electricity, transportation, and industry releases large amounts of greenhouse gases into the atmosphere. These gases trap heat, leading to a steady rise in the Earth's average temperature—a phenomenon commonly known as global warming.

The present climate scenario is alarming. The past decade has been the warmest recorded in human history. Heatwaves have become more frequent and intense, affecting millions of people worldwide. Extreme weather events such as floods, cyclones, droughts, and wildfires are no longer rare occurrences; they are becoming the new normal. These events not only cause loss of life and property but also strain economies, disrupt education, and deepen social inequalities.

One of the most visible impacts of climate change is on the natural environment. Glaciers and polar ice caps are melting at unprecedented rates, contributing to rising sea levels. Coastal cities and island nations now face the threat of submergence. Oceans are warming and becoming more acidic, endangering marine life and coral reefs. Forests, often called the “lungs of the Earth,” are being destroyed by deforestation and wildfires, reducing the planet's ability to absorb carbon dioxide.

Climate change also has serious implications for food and water security. Changing rainfall patterns and prolonged droughts affect agricultural productivity, putting farmers at risk and increasing food prices. Water scarcity is becoming a major concern in many regions, leading to conflicts and forced migration. Developing countries, despite contributing the least to global emissions, often suffer the most severe consequences due to limited resources and infrastructure.

Despite the grim reality, there is still hope. Awareness about climate change is growing, and governments, organizations, and individuals are beginning to take action. Renewable energy sources such as solar, wind, and hydro power are gaining popularity as cleaner alternatives to fossil fuels. Many countries have committed to reducing carbon emissions and achieving net-zero targets in the coming decades. Innovations in technology, sustainable agriculture, and green transportation offer promising solutions.

As college students, our role in addressing climate change is crucial. We represent a generation that is educated, connected, and capable of driving change. Small actions—such as reducing energy consumption, minimizing waste, using public transport, and supporting sustainable products—can collectively make a significant difference. Beyond personal choices, students can engage in climate activism, participate in awareness campaigns, support environmental policies, and use their voices on digital platforms to demand accountability from leaders and corporations.

Education plays a key role in the fight against climate change. Colleges and universities are spaces where ideas are formed and futures are shaped. By promoting environmental education, research, and sustainable campus practices, educational institutions can become powerful agents of change.

In conclusion, climate change is not just an environmental issue; it is a social, economic, and moral challenge of our time. The current situation makes it clear that delay is no longer an option. The choices we make today will determine the quality of life for future generations. By acting responsibly, thinking sustainably, and working collectively, we can still protect our planet and build a more resilient and equitable future.

WRAPPED UP

A Year in Review

As the final bell of the academic cycle echoes, we don't just close a chapter; we conclude an epic odyssey. "Wrapped Up: A Year in Review" is our moment to pause, reflect, and celebrate the collective resilience that has defined this extraordinary journey. It's an opportunity for every member of our educational ecosystem—from the inspiring mentors in the classroom to the dynamic minds in the student body and the supportive pillars of our community—to witness the blossoming of potential and the enduring power of the human spirit.

For Our Educators: The Catalysts of Curiosity

To the teachers, faculty, and educational leaders: you are the architects of tomorrow, the awakeners of dreams. This past year has been a testament to your adaptability and your profound commitment to not just fill pails with facts, but to light fires of curiosity.

- **Pioneering Spirit:** You seamlessly transitioned between traditional and innovative teaching frontiers, ensuring that "no child is left behind in learning". Your efforts in adapting curricula and fostering engaging environments turned challenges into catalysts for creative expression and knowledge acquisition.
- **Heartfelt Impact:** Beyond the measurable academic gains, you provided a steady hand and a compassionate heart. The influence of a great teacher is immeasurable and affects eternity. You didn't just teach subjects; you built confidence, sparked curiosity, and encouraged dreams, demonstrating that warmth is a vital element for the growing soul of a child.

We see your dedication, your passion, and your unwavering belief in the potential of every student. Your work is the foundation upon which all other professions are built.

For Our Students: The Beacons of Potential

To the students, the heart of our mission: this year was your canvas for self-discovery and a proving ground for your remarkable adaptability. You navigated complexities, embraced the spirit of inquiry, and emerged stronger, wiser, and more capable.

- **Journey of Growth:** Every late night of study, every complex problem solved, and every collaborative project completed represents a stride in your personal growth. The knowledge you have gained is a passport to the future, for tomorrow belongs to those who prepare for it today.
- **Unlocking Potential:** You've shown that learning is a lifelong adventure and that the beautiful thing about knowledge is that no one can take it away from you. As you look ahead, remember that you have within you the strength, the patience, and the passion to reach for the stars and change the world.

You are the future innovators and leaders, and your journey of relentless learning will light the path for a better, brighter world.

For Society: The Bedrock of Progress

To our community, the essential third pillar: your support, engagement, and belief in our educational system are the silent forces that ensure our collective success. Education is not just an institutional affair; it's a societal commitment and a powerful weapon for positive change.

- **Collective Strength:** This year underscored our interconnectedness. When we invest in our schools, we invest in the quality of our society, ensuring that our garden is one where every seed of knowledge can flourish. Your involvement in school activities, support systems, and ongoing dialogue has strengthened the very fabric of our community.
- **Vision Forward:** The lessons from this year remind us that by fostering an environment that values learning, critical thinking, and compassion, we are building a more robust and just society. Our collective efforts help create a world where every individual has the opportunity to thrive and contribute to the greater good.

As we wrap up this vibrant year in review, let's carry forward the invaluable wisdom and the indomitable spirit of growth. The new academic cycle stands before us like a blank chapter in a book, waiting for us to put words on its pages. Let us choose to write a story of continued inspiration, profound learning, and shared success. We learn today; we lead tomorrow.

Dr. Shaiphali Saxena
Assistant Professor
Department of Botany



The Alchemy Of Balance

MASTERING THE STUDENT SURVIVAL

In the relentless crucible of higher education, the traditional metrics of success—grade point averages and extracurricular accumulation—often overshadow the fundamental necessity of sustained well-being. The "**Comfort and Joy**" imperative challenges this narrow paradigm, offering a vital framework for students to transmute the pervasive stress of university life into a sustainable, fulfilling experience. This is not merely a soft skills manual; it is a strategic blueprint for thriving amidst academic rigor.

The Imperative of Self-Preservation

The core philosophy pivots on reframing self-care not as an optional luxury, but as a critical performance metric. Research shows that positive emotions influence a student's motivation, academic performance, and general well-being. By prioritizing mental and physical health, students unlock enhanced cognitive function, improved resilience, and a greater capacity for deep learning. The pursuit of joy—those deliberate "**pockets of reprieve**"—serves as both a buffer against burnout and a catalyst for engagement.

Strategic Deployment of Balance

Mastering the academic environment requires precision planning and the strategic utilization of available infrastructure:

- **Algorithmic Time Management:** Transition from basic to-do lists to sophisticated organizational frameworks like the PARA Method. Deconstruct monolithic assignments into granular, manageable tasks to mitigate cognitive load and banish the spectre of procrastination.
- **The Power of the Pause:** Cognitive science mandates regular intervals of rest. Integrate structured breaks into study schedules. Utilizing institutional resources, such as university-sponsored academic support centres and writing labs, is not a sign of weakness, but a high-efficiency strategy for maximizing output.
- **Academic Adaptability:** Acknowledge that students learn differently. Experiment with various study techniques like the Pomodoro technique to find what aids understanding best, and engage with material by making meaningful connections to real-world applications.

Fortifying the Inner Citadel

Resilience is a cultivated asset. Building a robust "inner citadel" involves meticulous attention to foundational human needs:

- **Biohacking Your Routine:** Establish ironclad sleep and nutrition schedules. Adhering to the National Sleep Foundation's guidelines for 7-9 hours of sleep is non-negotiable for cognitive peak performance. Fuel your body with a diet rich in whole foods and stay hydrated.
- **Mindfulness as Methodology:** Integrate mindfulness and meditation techniques endorsed by mental health professionals to manage stress responses and maintain focus. Spending even a short time in nature can significantly lower stress levels.
- **Curating Your Narrative:** Interrogate and reframe negative self-talk. Cultivating self-compassion is a high-yield psychological investment that directly impacts motivation and persistence, transforming setbacks into learning opportunities.

Architecting Your Ecosystem

Social capital is a powerful survival tool. Research indicates that social support from family and friends positively impacts students' well-being and academic engagement.

- **Cultivating Connections:** Actively build a high-trust support network. Leverage university-provided mental health services, student clubs, and peer mentorship programs as essential infrastructure for navigating challenges.
- **The Art of Subtraction:** Protect your energy with firm boundaries. Decouple from draining obligations and toxic social dynamics to safeguard your personal bandwidth. It is okay to politely decline invitations when your plate is full.

The ultimate goal of the "**Comfort and Joy**" imperative is the development of a resilient, self-aware graduate capable of sustainable success long after the final exam has been graded. It's an investment in a future where well-being and achievement are synonymous.

Dr. Shaiphali Saxena
Assistant Professor
Department of Botany



समसामायिकी



(अंक दिसम्बर)

समसामयिकी

- किस राज्य/केंद्रशासित प्रदेश में Limestone Blocks की पहली नीलामी Mineral Development को बढ़ावा देने के लिए की जाएगी? **जम्मू कश्मीर**
- ल्यूक लिटलर किस खेल में दुनिया के सबसे कम उम्र के नंबर 1 खिलाड़ी बने हैं? **स्नूकर**
- दुनिया में पहली बार किस देश के हवाई अड्डे पर WiFi 7 लॉन्च किया गया? **संयुक्त अरब अमीरात**
- 2026 अंतर्राष्ट्रीय समुद्री शिखर सम्मेलन की मेजबानी कौन करेगा? **कोच्चि**
- प्रधानमंत्री कार्यालय का नया नाम क्या रखा गया? **सेवा तीर्थ**
- भारत में टीबी से मृत्यु दर 2015 के 28 प्रति लाख से घटकर 2024 में कितनी हो गई? **21 पर लाख**
- ऊषा जानकीराम को RBI में किस पद पर नियुक्त किया गया है? **कार्यकारी निदेशक**
- माधव खुराना को किस मामले में विशेष लोक अभियोजक नियुक्त किया गया है? **लाल किला विस्फोट मामला**
- DRDO ने कौन-सा सिस्टम सफलतापूर्वक परीक्षण किया है? **लड़ाकू विमान एस्केप सिस्टम का उच्च गति रॉकेट-स्लेज परीक्षण**
- 102 वर्षों में पहली बार नागपुर विश्वविद्यालय की पहली महिला कुलपति कौन बनीं? **डॉ. प्रज्ञा पाटील**
- लोकसभा ने 2025 में किस विधेयक को मंजूरी दी? **केंद्रीय उत्पाद शुल्क (संशोधन) विधेयक, 2025**
- RBI ने रेपो रेट में कितनी कटौती की? **25 आधार अंक**
- RBI ने GDP वृद्धि अनुमान को कितना बढ़ाकर किया? **7.3%**
- पासपोर्ट सत्यापन सुविधा किस प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध हुई? **डिजिलॉकर**
- SEBI ने कम जोखिम वाले विदेशी निवेशकों के लिए कौन-सी सुविधा शुरू की? **सिंगल विंडो एक्सेस**
- विक्टोरिया यूनिवर्सिटी के भारतीय परिसर की नींव कहाँ रखी गई? **गुरुग्राम**
- 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा में ISSF विश्व कप फाइनल 2025 में स्वर्ण पदक किसने जीता? **सिमरनप्रीत कौर बराड़**
- कौन सा राज्य 100% मतदाता सूचियों का डिजिटलीकरण करने वाला पहला राज्य बना? **राजस्थान**
- साइबर सुरक्षा को मजबूत करने हेतु कौन-सी दो संस्थाओं ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए? **NSMDC – IIT Kanpur**
- फँर्मूला बन विश्व चैम्पियनशिप 2025 में अपनी पहली जीत किसने दर्ज की? **लैंडो नॉरिस**
- एशिया के पहले सांस्कृतिक साथी पक्षी अभयारण्य को कहाँ पुनर्जीवित किया गया? **माजुली**
- भारत की पहली नई Amplitude Scanning Technology आधारित मशीन किसे दी गई? **भारतीय सेना**
- ट्रैफिक जुर्माने और विवादों को कम करने के लिए कौन-सी सेवा शुरू की गई? **PARKRVA सेवा**
- भारत की पहली IoT Tech Wafer Chip किसके द्वारा लॉन्च की गई? **SINE-IIT Bombay**
- पशु कल्याण कार्य के लिए किस श्रेणी को वैश्विक मानवीय पुरस्कार मिला? **सड़क पशु देखभाल**

- माइक्रोसॉफ्ट ने भारत के क्लाउड व AI इंफ्रास्ट्रक्चर में कितने बिलियन डॉलर का निवेश घोषित किया? **17.5 Billion**
- किस भारतीय कला को यूनेस्को की 'अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक विरासत सूची' में शामिल किया गया? **दियारा की पूर्णी कला**
- कृषि माइक्रोबियल सहयोग हेतु भारत ने किस देश के साथ MoU साइन किया? **नीदरलैंड्स**
- सुजलाम भारत ऐप का शुभारंभ किसने किया? **सी. आर. पाटिल**
- गूगल का मुख्य प्रौद्योगिकीविद (AI Infrastructure) किसे नियुक्त किया गया? **अमीन बहदत**
- राष्ट्रपति मुर्मु ने किस राज्य में ₹1,387 करोड़ की परियोजनाओं का शुभारंभ किया? **मणिपुर**
- भारत का पहला स्वदेशी हाइड्रोजन ईंधन सेल यात्री पोत कहाँ लॉन्च हुआ? **वाराणसी**
- भारत ने आर्थिक सहयोग के लिए किस देश के साथ प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए? **इटली**
- चुनाव आयोग ने किस प्रक्रिया की निगरानी के लिए विशेष रोल ऑब्जर्वर नियुक्त किए? **मतदाता सूची संशोधन (SIR)**
- 2026 सीजन के लिए बढ़े हुए MSP को किसने मंजूरी दी? **केंद्रीय मंत्रिमंडल**
- संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने भारत में नया UN Resident Coordinator किसे नियुक्त किया है? **स्टीफन प्रेस्नर**
- रोमन गोफमैन को किस देश की राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी का प्रमुख नियुक्त किया गया है? **इजराइल**
- वोरेयुर कॉटन साड़ी और थूयमल्ली चावल किस राज्य से संबंधित हैं जिन्हें GI टैग दिया गया है? **तमिलनाडु**
- Perplexity AI का ब्रांड एंबेसडर किसे नियुक्त किया गया है? **लियोनेल मेसी**
- भारत ने पहला स्कॉश विश्व कप स्वर्ण पदक कहाँ जीता? **चेन्नई, भारत**
- उपराष्ट्रपति सी. पी. राधाकृष्णन ने किसके सम्मान में स्मारक डाक टिकट जारी किया? **पेरम्पिटुगु मुथुरैया द्वितीय सुर्वर्ण मारन**
- प्रेस क्लब ऑफ इंडिया की पहली महिला अध्यक्ष कौन बनी हैं? **नलिनी सिंह**
- इंडियन मिलिट्री एकेडमी (IMA) से ग्रेजुएट होने वाली पहली महिला अधिकारी कौन बनी हैं? **साई जाधव**
- किस देश का राष्ट्रीय व्यंजन यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त पहली राष्ट्रीय खाद्य परंपरा बना है? **मैक्रिस्को**
- C-DAC द्वारा विकसित भारत के पहले स्वदेशी 1.0 GHz, 64-बिट डुअल-कोर माइक्रोप्रोसेसर का नाम क्या है? **VEGA64**
- ज्ञान भारतम मिशन के तहत भारत का पहला योग और आयुर्वेद-आधारित क्लस्टर सेंटर किसे घोषित किया गया है? **पतंजलि यूनिवर्सिटी**
- हाल ही में PM मोदी को किस देश के सबसे बड़े सम्मान 'द ग्रेट ऑर्डर ऑफ द नाइल' से सम्मानित किया गया है? **इथियोपिया**
- भारत विश्व में किसका सबसे बड़ा उत्पादक है जिसकी वैश्विक हिस्पेदारी लगभग 80% है? **मखाना**
- हाल ही में निधन वाले प्रसिद्ध भारतीय मूर्तिकार राम सुतार की आयु कितनी थी? **100 वर्ष**
- भारत का पहला वन विश्वविद्यालय कहाँ स्थापित किया जाएगा? **गोरखपुर**
- वैश्विक डोपिंग उल्लंघन मामलों में भारत को कौन-सा स्थान मिला है? **पहला**
- 2025 का दुनिया का सर्वश्रेष्ठ एयरपोर्ट किसे घोषित किया गया है? **चांगी एयरपोर्ट, सिंगापुर**
- ब्राजील द्वारा ब्रिक्स सम्मेलन 2026 की अध्यक्षता किस देश को सौंपी गई है? **भारत**

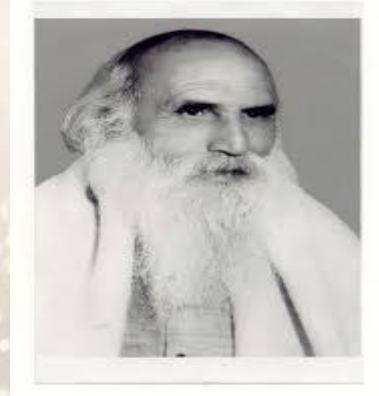
- युवा शोधकर्ताओं के लिए 'शक्ति स्कॉलर्स फेलोशिप' किस संस्था द्वारा शुरू की गई? राष्ट्रीय महिला आयोग
- रक्षा अनुसंधान एवं विकास को मजबूत करने के लिए DRDO ने किस संस्थान के साथ MoU किया? राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय
- वित्तीय धोखाधड़ी जोखिम संकेतक के उपयोग से कितने करोड़ रुपये की साइबर धोखाधड़ी रोकी गई? ₹ 660 करोड़
- उच्च शिक्षा पर अंतरराष्ट्रीयकरण के लिए नीति रिपोर्ट किस संस्था ने जारी की? नीति आयोग



दिसम्बर माह में जन्मी उत्तराखण्ड की प्रेरणादायी हस्तियाँ

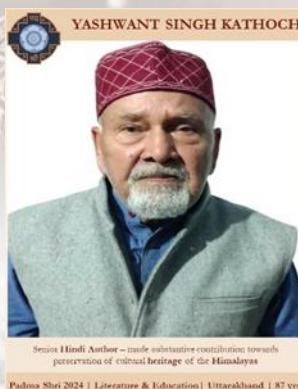
उत्तराखण्ड के हरे-भरे, शांत परिदृश्यों से, जहाँ पहाड़ दृढ़ता की कहानियाँ सुनाते हैं, दिसम्बर में जन्मे दिग्जों का एक अद्भुत समूह प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचा। दशकों से चली आ रही उनकी कहानियाँ उनकी मातृभूमि की भावना को प्रतिध्वनित करती हैं— दृढ़ संकल्प, जुनून और अपने काम के प्रति अटूट प्रतिबद्धता की भावना।

1. इंद्रमणि बडोनी, उत्तराखण्ड के गांधी



इंद्रमणि बडोनी, जिन्हें अक्सर “उत्तराखण्ड के गांधी” कहा जाता है, गढ़वाल क्षेत्र के एक सम्मानित राजनीतिक नेता और सामाजिक कार्यकर्ता थे। उन्होंने उत्तराखण्ड राज्य आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और शांतिपूर्ण आंदोलनों तथा जनस्तरीय mobilization के माध्यम से एक अलग पर्वतीय राज्य के गठन के लिए निरंतर संघर्ष किया। राजनीति के

अलावा, बडोनी एक शिक्षाविद और लोक कलाकार भी थे, जिनका अपने मूल क्षेत्र की सांस्कृतिक जड़ों से गहरा जुड़ाव था। उनके नेतृत्व, सादगी और ईमानदारी ने उन्हें उत्तराखण्ड की सामूहिक स्मृति में स्थायी सम्मान दिलाया।



2. डॉ. यशवंत सिंह कठोच

डॉ. यशवंत सिंह कठोच पौड़ी गढ़वाल से संबंध रखने वाले एक प्रसिद्ध इतिहासकार, पुरातत्वविद् और लेखक हैं। वे उत्तराखण्ड के इतिहास, कला और संस्कृति पर अपने व्यापक शोध के लिए जाने जाते हैं, जिनके माध्यम से क्षेत्र की विरासत को समझने में गहरी अंतर्दृष्टि मिली है। उनका जन्म उत्तराखण्ड के पौड़ी गढ़वाल ज़िले के मासन गाँव में हुआ था। डॉ. कठोच ने उच्च शिक्षा आगरा विश्वविद्यालय से प्राप्त की, जहाँ से उन्होंने प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व में स्नातकोत्तर (एम.ए.) की उपाधि अर्जित की। इसके पश्चात उन्होंने हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय से इतिहास एवं पुरातत्व में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

3. सुरेन्द्र सिंह वालिदया (जन्म: 29 दिसंबर 1962)



सुरेन्द्र सिंह वालिदया पिथौरागढ़ ज़िले के एक प्रसिद्ध भारतीय रोअर हैं, जिनकी उपलब्धियों ने भारत में रोइंग खेल को राष्ट्रीय पहचान दिलाई। उन्होंने एशियाई रोइंग चैंपियनशिप सहित कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक जीतकर देश का नाम रोशन किया। उनकी सफलता ने पर्वतीय क्षेत्रों से आने वाले भविष्य के

भारत के लिए पहला व्यक्तिगत ओलंपिक स्वर्ण पदक जीता। हिमालय की तलहटी में पोषित एक शांत दृढ़ संकल्प से उपजी उनकी जीत ने भारतीय एथलीटों की एक पीढ़ी में एक नई ऊर्जा जगा दी।



4. सनी राणा (क्रिकेटर)

सनी राणा का जन्म 25 दिसंबर 1987 को देहरादून, उत्तराखण्ड में हुआ। वे एक प्रतिभाशाली क्रिकेट खिलाड़ी हैं, जिन्होंने लिस्ट-ए, प्रथम श्रेणी और टी20 प्रारूपों में उत्तराखण्ड टीम का प्रतिनिधित्व किया है। वर्ष 2018 में पदार्पण करने के बाद से वे टीम के लिए लगातार योगदान देते आ रहे हैं। उनकी बहुमुखी प्रतिभा और खेल के प्रति समर्पण उन्हें उत्तराखण्ड क्रिकेट का एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बनाता है।

5. विजय जेठी (क्रिकेटर)

विजय जेठी एक पेशेवर क्रिकेट खिलाड़ी हैं, जिनका जन्म 2 दिसंबर 1994 को झनकट, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड में हुआ। वे दाएं हाथ के बल्लेबाज हैं और उन्होंने विजय हजारे ट्रॉफी तथा रणजी ट्रॉफी जैसी प्रमुख भारतीय घरेलू क्रिकेट प्रतियोगिताओं में उत्तराखण्ड का प्रतिनिधित्व किया है। उनके निरंतर और प्रभावशाली प्रदर्शन ने उन्हें राज्य की क्रिकेट टीम का एक महत्वपूर्ण सदस्य बना दिया है। घरेलू क्रिकेट में वे उत्तराखण्ड के उभरते हुए प्रतिभाशाली खिलाड़ियों में गिने जाते हैं।



6. कार्तिक जोशी (क्रिकेटर)

कार्तिक जोशी का जन्म 4 दिसंबर 1995 को हल्द्वानी, उत्तराखण्ड में हुआ। वे उत्तराखण्ड क्रिकेट टीम के एक प्रतिभाशाली बल्लेबाज हैं। प्रथम श्रेणी क्रिकेट में दोहरा शतक लगाकर उन्होंने अपनी विशेष पहचान बनाई है और भारतीय घरेलू क्रिकेट में निरंतर अपने खेल को निखार रहे हैं। उनकी मेहनत और लगन पहाड़ी राज्य से उभर रही खेल प्रतिभाओं की बढ़ती गुणवत्ता को दर्शाती है।

7. मीना राणा (लोकगायिका, उत्तराखण्ड)

मीना राणा उत्तराखण्ड की प्रसिद्ध लोकगायिका हैं, जिन्होंने अपने मधुर स्वर से गढ़वाली और कुमाऊँनी लोकसंगीत को नई पहचान दी है। उनके गीतों में पहाड़ की संस्कृति, परंपराएँ, प्रकृति और जनजीवन की सजीव झलक मिलती है। मीना राणा ने अनेक लोकगीत, जागर, झोड़ा, चांचरी और देवी-देवताओं से जुड़े गीत गाकर उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध किया है। उनके संगीत ने न केवल राज्य में बल्कि देश-विदेश में उत्तराखण्ड के लोकसंगीत को लोकप्रिय बनाया है।



मौहना

SINGER : MEENA RANA
MUSIC : SANJAY KUMOLA

8. साहब सिंह रमोला (गढ़वाली गायक एवं संगीतकार)

साहब सिंह रमोला उत्तराखण्ड के टिहरी गढ़वाल जिले से ताल्लुक रखने वाले प्रसिद्ध गढ़वाली गायक और संगीतकार हैं। उन्हें उत्तराखण्ड का “मेलोडी किंग” कहा जाता है, क्योंकि उनके गीतों में मधुर धुनों और लोकभावनाओं का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। उनके लोकप्रेरित गीत प्रेम, प्रकृति और पहाड़ी सांस्कृतिक जीवन के विषयों को दर्शाते हैं। उनका संगीत स्थानीय लोगों के दिलों से गहराई से जुड़ा हुआ है और उत्तराखण्ड की लोकसंस्कृति को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करता है।



बाली

Singer : Sahab Singh Ramola Music Arranger : Ravish Mehta & Parvez Erwani
Lyrics : Ravish Mehta & Parvez Erwani
Produced by : Ravish Mehta & Parvez Erwani
Directed by : Ravish Mehta & Parvez Erwani
Edited by : Ravish Mehta & Parvez Erwani
Mastered by : Ravish Mehta & Parvez Erwani

दिसम्बर माह के प्रेरणादायी व्यक्तित्व



एक जीवन परिचय

इन्द्रमणी बडोनी

लोक-संस्कृति के संरक्षक



"यदि आपने जीवित गांधी को देखना है तो उत्तराखण्ड की धरती पर चले जाएं।" यह टिप्पणी अमेरिकी समाचार माध्यम BBC द्वारा इन्द्रमणी बडोनी के बारे में की गई थी, जो उत्तराखण्ड के इस महान विभूति की जीवनदृष्टि और कार्यकलापों का सटीक विवरण प्रदान करती है। 24 दिसम्बर 1925 को टिहरी गढ़वाल के 'अखोड़ी' गाँव में जन्मे इन्द्रमणी बडोनी केवल एक राजनीतिक नेता नहीं थे, बल्कि उत्तराखण्ड की लोक-संस्कृति और सांस्कृतिक पहचान के एक प्रबल संरक्षक थे। उनका 74 वर्षीय जीवन (1925-1999) उत्तराखण्ड की पहाड़ी संस्कृति को संरक्षित और संवर्धित करने तथा पहाड़ी जनता की आवाज को राष्ट्रीय मंच पर प्रतिष्ठित करने के अथक प्रयासों से भरा हुआ था।

प्रारम्भिक जीवन और सांस्कृतिक अभिरुचि

इन्द्रमणी बडोनी का बचपन कठिनाइयों और गरीबी में बीता किन्तु इसी कठोर परिवेश ने उनमें सामाजिक संवेदनशीलता और सांस्कृतिक चेतना का बीजारोपण किया। देहरादून के DAV PG कॉलेज से 1949 में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद बडोनी ने शिक्षा और सामाजिक कार्य के क्षेत्र में अपना योगदान देना शुरू किया। किन्तु उनकी पहचान मुख्य रूप से एक थिएटर कलाकार और लोक कला के ज्ञाता के रूप में स्थापित हुई। वह गढ़वाली लोक नृत्यों में विशेषकर केदार नृत्य (जिसे चौफला भी कहा जाता है) में अत्यंत प्रवीण थे। गढ़वाल की पहाड़ी संस्कृति और परंपराओं के प्रति उनकी गहरी रुचि उन्हें शुरुआत से ही लोक कलाओं के संरक्षण और प्रचार की ओर प्रवृत्त करती रही। इस संवेदनशीलता ने बाद में उन्हें एक सांस्कृतिक दूत के रूप में रूपांतरित किया, जिन्होंने न केवल पहाड़ी संस्कृति को संरक्षित किया बल्कि उसे जन-आनंदोलन की शक्तिशाली माध्यम में भी परिवर्तित किया।

लोक-नृत्य और कला का संरक्षण

इन्द्रमणी बडोनी की सबसे महत्वपूर्ण सांस्कृतिक उपलब्धि उत्तराखण्ड के पारम्परिक लोक नृत्यों को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रस्तुत करना था। 1956 में, जब नई दिल्ली के राजपथ पर गणतंत्र दिवस की फेरेड का आयोजन हो रहा था, तब बडोनी ने प्रसिद्ध लोक कलाकार शिवजानी ढुंग और गिराज ढुंग के साथ मिलकर केदार नृत्य का मंचन किया। यह प्रदर्शन इतना आकर्षक और प्रभावशाली था कि उस समय के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू भी इस नृत्य में भाग लेने के लिए मंच पर आ गए और स्वयं नृत्य करने लगे। यह घटना केवल एक सांस्कृतिक प्रदर्शनी नहीं थी, बल्कि यह एक ऐतिहासिक क्षण था जब पहाड़ी समाज की लोक परंपराएं देश के सर्वोच्च राजनीतिक मंचों पर स्वीकृति प्राप्त करती दिख रही थीं। इसके अलावा बडोनी ने केवल नृत्य तक सीमित नहीं रहे, बल्कि विभिन्न लोक वाद्य यन्त्रों में भी दक्षता प्राप्त की और इन यंत्रों को आधुनिक दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया।

लोक-कला संरक्षण क्षेत्र	विशेष योगदान	प्रभाव
केदार नृत्य (Kedar Nritya)	1956 गणतंत्र दिवस फेरेड प्रदर्शन	पहली बार राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन
लोक वाद्य यन्त्र	परम्परागत यन्त्रों में दक्षता प्रदर्शन	सांस्कृतिक ज्ञान का संरक्षण
लोक नाटक	विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शन	सांस्कृतिक जागरूकता वृद्धि

लोक-गाथाओं का नाट्य मंचन

बडोनी जी की सांस्कृतिक संरक्षण यात्रा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू उत्तराखण्ड की पारम्परिक लोक गाथाओं को नाटकीय रूप में प्रस्तुत करना था। उन्होंने माधोसिंह भण्डारी की वीर गाथा का सर्वप्रथम नाट्य मंचन किया, जो उत्तराखण्ड के एक महान ऐतिहासिक व्यक्तित्व है। माधोसिंह भण्डारी की गाथा गढ़वाल के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है और इस गाथा को नाटकीय रूप में प्रस्तुत करके बडोनी ने न केवल इतिहास को जीवन्त किया बल्कि आगामी पीढ़ियों तक इस ज्ञान को संचारित करने का मार्ग भी प्रशस्त किया।

इसके अतिरिक्त उन्होंने मलेथा के लोक गीतों को भी विभिन्न मंचों पर प्रस्तुत किया। ये प्रदर्शन केवल मनोरंजन के लिए नहीं थे, बल्कि एक शैक्षणिक उद्देश्य को पूरा करते थे। इन गाथाओं के माध्यम से, पहाड़ी की सांस्कृतिक विरासत, पारम्परिक मूल्य प्रणाली, और स्थानीय जनता के जीवन संर्घण को एक जीवंत और सरल रूप में प्रस्तुत किया जाता था। दिल्ली और मुम्बई जैसे महानगरों में इन प्रदर्शनों के माध्यम से, बडोनी पहाड़ी संस्कृति को राष्ट्रीय चेतना का अंग बनाने में सफल हुए।

पर्यटन और आर्थिक विकास के साथ सांस्कृतिक संरक्षण

बडोनी की सांस्कृतिक दृष्टि केवल कला-कलाओं तक सीमित नहीं थी। वह समझते थे कि पहाड़ी क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिए पर्यटन एक महत्वपूर्ण साधन हो सकता है और साथ ही यह सांस्कृतिक संरक्षण का भी एक माध्यम बन सकता है। इस दूरदर्शी सोच के अन्तर्गत, उन्होंने उत्तराखण्ड के छिपे हुए प्राकृतिक और सांस्कृतिक खजानों को विश्व मंच पर लाने का प्रयास किया।

उन्होंने खतलिंग ग्लेशियर की खोज की, जो टिहरी गढ़वाल में स्थित एक महत्वपूर्ण भूवैज्ञानिक स्थान है और भिलंगना नदी का स्रोत है। इसके अलावा, वह सहस्रताल (Sahasratal) जैसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों को विश्व पर्यटकों के लिए एक आकर्षण केंद्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पंवाली-काठा और अन्य प्राकृतिक स्थलों को विश्व के मानचित्र पर लाना भी बडोनी की दूरदर्शिता का प्रमाण है। यह दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण था क्योंकि इसने सांस्कृतिक संरक्षण और आर्थिक विकास को एक सूत्र में पिरोया। जब पहाड़ी क्षेत्र में पर्यटन बढ़ता है, तो स्थानीय सांस्कृतिक परंपराओं को भी मूल्य मिलता है, और पहाड़ी जनता के लिए आजीविका के नए साधन भी सृजित होते हैं। यह एक समग्र विकास का दर्शन था।

पृथक उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन में लोक-संस्कृति की भूमिका

बडोनी की सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक उपलब्धि और सांस्कृतिक योगदान पृथक उत्तराखण्ड राज्य के आन्दोलन में दिखाई देता है। 1980 में उत्तराखण्ड क्रान्ति दल (Uttarakhand Kranti Dal) में शामिल होने के बाद बडोनी ने एक नया और अभिनव तरीका अपनाया - वह लोक-संस्कृति को राजनीतिक आन्दोलन का साधन बनाया। 1988 में उन्होंने पिथौरागढ़ के तवाघाट से देहरादून तक एक ऐतिहासिक 105 दिनों की पदयात्रा की, जिसमें उन्होंने लगभग 2,000 किलोमीटर की दूरी तय की। इस पदयात्रा के दौरान, वह सैकड़ों गाँवों और शहरों में गए, और हर स्थान पर पहाड़ी लोक-संस्कृति के प्रदर्शन के माध्यम से पृथक राज्य की आवश्यकता को समझाया। उन्होंने संगीत, नृत्य, और लोक नाटकों के माध्यम से जनता को सम्बोधित किया, जिससे लोग स्वयं को इस आन्दोलन का हिस्सा महसूस करने लगे।

यह दृष्टिकोण अत्यन्त महत्वपूर्ण और क्रान्तिकारी था। परम्परागत राजनीतिक नारों और भाषणों के बजाय, बडोनी ने लोक-संस्कृति को आन्दोलन का केन्द्रीय तत्व बनाया। जब किसान अपने खेतों में पहाड़ी लोक नृत्य देखते थे या गाँव के मन्दिरों में माधोसिंह भंडारी की गाथा सुनते थे, तो वह राजनीतिक अभियान को अपनी सांस्कृतिक पहचान से जुड़ा हुआ महसूस करते थे। यह लोक-संस्कृति को केवल संरक्षण का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की शक्तिशाली शक्ति के रूप में उपयोग करना था।

1992 में, मकर संक्रान्ति के अवसर पर बागेश्वर के उत्तरायणी मेले में, बडोनी ने गैरसैन को उत्तराखण्ड की राजधानी के रूप में घोषित किया। यह घोषणा उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। 1994 में, जब पृथक राज्य की मांग को पूरा नहीं किया गया, तो बडोनी ने राज्य निर्माण के लिए एक आमरण अनशन किया, जिससे आन्दोलन को और भी अधिक गति मिली।

"लोक संस्कृति दिवस" - एक स्थायी विरासत

बडोनी की सांस्कृतिक दृष्टि का सबसे दृश्यमान परिणाम वह है कि आज उत्तराखण्ड में उनके जन्मदिन (24 दिसंबर) को "लोक संस्कृति दिवस" (Lok Sanskriti Divas) के रूप में मनाया जाता है। यह केवल एक सरकारी घोषणा नहीं है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक संकल्प है कि लोक-संस्कृति को संरक्षित और संवर्धित किया जाता रहे। प्रत्येक 24 दिसम्बर को, भारत के विभिन्न प्रांतों में स्कूलों, कॉलेजों, और सामुदायिक केन्द्रों में छालिया, झोड़ा, चांचरी, और अन्य गढ़वाली-कुमाऊँनी लोक नृत्य प्रस्तुत किए जाते हैं। छात्र-छात्राएँ पारम्परिक पहाड़ी परिधानों में सज-संवरकर इन नृत्यों का प्रदर्शन करते हैं, और इसके माध्यम से अपनी सांस्कृतिक पहचान को व्यक्त करते हैं।

2025 में जब इन्द्रमणी बडोनी की 100वीं जयन्ती मनाई गई तो यह उत्सव केवल एक व्यक्ति को श्रद्धांजलि देने तक सीमित नहीं रहा। इसके बजाय, यह एक सार्वभौमिक सांस्कृतिक जागृति का अवसर बन गया, जिसमें युवा पीढ़ी ने अपनी पारम्परिक कला-कलाओं को प्रदर्शित किया और उनके महत्व को समझा।

सांस्कृतिक दर्शन और राजनीतिक दृष्टिकोण

इन्द्रमणी बडोनी का सांस्कृतिक दर्शन एक अद्वितीय मिश्रण था - एक ओर तो वह परंपरा के प्रति गहरी श्रद्धा रखते थे, लेकिन दूसरी ओर वह इस परंपरा को आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिक बनाना चाहते थे। वह समझते थे कि लोक-संस्कृति केवल अतीत का धरोहर नहीं है, बल्कि वह वर्तमान और भविष्य में भी एक जीवंत शक्ति हो सकती है। उनके कार्यों में हम देख सकते हैं कि कैसे वह सांस्कृतिक संरक्षण को सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक विकास, और राजनीतिक आन्दोलन के साथ जोड़ते थे। यह एक समग्र दृष्टिकोण था जो आधुनिक विकास विर्माण में भी प्रासंगिक बनी हुई है। आज के समय में, जब वैश्वीकरण (globalization) के कारण स्थानीय संस्कृतियों का हास हो रहा है, बडोनी का यह दर्शन अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता

बडोनी की उपलब्धियों को केवल स्थानीय या राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय माध्यमों द्वारा भी स्वीकृति मिली। अमेरिकी अखबार वाशिंगटन पोस्ट ने उन्हें सर्वप्रथम "उत्तराखण्ड का गांधी" (Gandhi of Uttarakhand) संबोधित किया, जो उनके अहिंसक और शांतिपूर्ण पद्धति का एक प्रमाण था। BBC द्वारा दी गई टिप्पणी - "यदि आपने जीवित गाँधी को देखना है तो उत्तराखण्ड जाओ" - उनके व्यक्तित्व की सरलता और सामाजिक कार्य के प्रति उनकी निष्ठा को दर्शाती है।

निधन और विरासत

18 अगस्त 1999 को, ऋषिकेश के विठ्ठल आश्रम में इन्द्रमणी बडोनी का निधन हो गया। हालांकि वह अपने सजीव रूप में अपनी पहाड़ी जनता के बीच नहीं रहे, किन्तु उनकी दृष्टि और कार्य शाश्वत रूप में उत्तराखण्ड की संस्कृति में अंकित हो गए। 9 नवम्बर 2000 को उनके निधन के लगभग एक वर्ष बाद उत्तराखण्ड राज्य का निर्माण हुआ - यह बडोनी के संघर्ष और दूरदर्शिता की सबसे बड़ी कामयाबी थी। आज उत्तराखण्ड में किसी भी सांस्कृतिक कार्यक्रम में जब केदार नृत्य प्रस्तुत किया जाता है या लोक गाथाओं का मंचन होता है, तो वह अप्रत्यक्ष रूप से बडोनी को श्रद्धांजलि देने का ही माध्यम बन जाता है। उन्होंने केवल सांस्कृतिक कार्य नहीं किए बल्कि एक ऐसी परम्परा की स्थापना की जिसमें लोक-संस्कृति को समाज के विकास का एक अभिन्न अंग माना जाता है।

निष्कर्ष

इन्द्रमणी बडोनी का जीवन और कार्य यह प्रदर्शित करते हैं कि सांस्कृतिक संरक्षण केवल एक अकादमिक या संग्रहालय-केंद्रित गतिविधि नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत, गतिशील और सामाजिक परिवर्तन के अग्रदूत के रूप में कार्य कर सकती है। वह समझते थे कि प्रत्येक लोक नृत्य, प्रत्येक लोक गीत, और प्रत्येक परंपरा अपने आप में एक जनसमुदाय की पहचान, गौरव, और आत्मविश्वास को प्रतिबिंधित करती है। बडोनी का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने पहाड़ी जनता को यह संदेश दिया कि उनकी संस्कृति, उनके नृत्य, उनकी गाथाएँ - ये सब कुछ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर सम्मानीय हो सकते हैं। उन्होंने साबित किया कि ग्रामीण और सीमांत समुदायों की संस्कृति केवल "पिछड़ी" नहीं है, बल्कि यह एक समृद्ध और महत्वपूर्ण विरासत है।

आज जब वैश्विक संकट का सामना कर रहा है - जहां स्थानीय पहचान को खोया जा रहा है, और सांस्कृतिक बहुलता को धमकी दी जा रही है - इन्द्रमणी बडोनी की विरासत अधिक प्रासंगिक हो जाती है। लोक-संस्कृति के ये संरक्षक हमें सिखाते हैं कि आधुनिकता और परंपरा को एक-दूसरे के विरोधी के रूप में नहीं, बल्कि पूरक के रूप में देखा जा सकता है। यह एक ऐसी दृष्टि है जिसे आज की दुनिया को सबसे अधिक आवश्यकता है। इन्द्रमणी बडोनी केवल एक नाम नहीं हैं, बल्कि एक आनंदोलन, एक दर्शन, और एक प्रतिश्रुति हैं - कि हम अपनी संस्कृति को संरक्षित करेंगे, उसे जीवन्त रखेंगे, और उसके माध्यम से एक बेहतर समाज का निर्माण करेंगे।

डॉ० जितेन्द्र प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर
भूगोल विभाग



दिसम्बर माह के महत्वपूर्ण दिवस

December
2025

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

दिसम्बर माह के महत्वपूर्ण दिवस

क्र.सं.	तिथि	दिवस	विवरण
1.	दिसम्बर 1	विश्व एड्स दिवस	विश्व भर में ये दिन एचआईवी एड्स के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से मनाया जाता है। इसकी शुरुआत साल 1988 में की गई थी। हर साल इस दिन एड्स से जुड़ी किसी नई थीम को आधार बनाकर काम किया जाता है। दुनिया भर के कई लोग एचआईवी एपीडेमिक को खत्म करने के लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं।
2.	दिसम्बर 2	राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस	साल के आखिरी महीने के दूसरे दिन देश भर में प्रदूषण और इससे हो रहे हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूकता अभियान चलाया जाता है। ये दिन उन लोगों की याद में देखा जाता है, जिन्होंने भोपाल गैस कांड में अपने जाने गवाई थीं।
		अन्तर्राष्ट्रीय दासता उन्मूलन दिवस	ये दिन आधुनिक काल की दास प्रथा और ह्यूमन राइट्स के खिलाफ काम कर रहे लोगों को कट्ठरे में खड़ा करता है। दुनिया भर में करीब 40 मिलियन लोग ऐसे हैं, जो मॉडर्न स्लेवरी का शिकार हैं। इंटरनेशनल डे फॉर अबॉलिशन ऑफ स्लेवरी ऐसा दिन है, जो उन स्थितियों और अत्याचारों को याद करता है। जो धमकी, हिंसा, पावर की वजह से पैदा हुई है।
		वर्ल्ड कंप्यूटर लिटरेसी डे	डिजिटल दुनिया बनाने के लिए हर किसी का टेक्नोलॉजी से परिचित होना जरूरी है। इसी उद्देश्य की खातिर ये दिन मनाया जाता है, ताकि महिलाओं और बच्चों को तकनीकी ज्ञान प्राप्त करने के लिए एनकरेज किया जा सके।
3.	दिसम्बर 3	अन्तर्राष्ट्रीय दिव्यांगजन दिवस	इस दिन को वर्ल्ड डे ऑफ हैंडीकैप्ड और इंटरनेशनल डे ऑफ पर्सन्स विथ डिसेबिलिटी के नाम से भी जाना जाता है। 3 दिसम्बर को दिव्यांग भाई-बंधुओं के प्रति समझ, जागरूकता और अपनत्व के भाव का प्रचार करने के उद्देश्य से देखा जाता है।
4.	दिसम्बर 4	अन्तर्राष्ट्रीय बैंक दिवस	अंतर्राष्ट्रीय बैंक दिवस (International Day of Banks) हर साल 4 दिसम्बर को मनाया जाता है, जिसे संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सतत विकास (Sustainable Development) के वित्तपोषण और वित्तीय समावेशन (Financial Inclusion) में बैंकों की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानने के लिए घोषित किया था, ताकि गरीबी कम करने, असमानता घटाने और वैश्विक चुनौतियों से निपटने में मदद मिल सके।
		भारतीय नौसेना दिवस	देश के विकास और सुरक्षा में भारतीय जल सेना और नेवी के जवानों की कुर्बानियों, तकलीफों और उपलब्धियों को याद करने के लिए 4 दिसम्बर का दिन मनाया जाता है।
5.	दिसम्बर 5	विश्व मृदा दिवस	धरती, सेहतमंद इकोसिस्टम और मानवता की भलाई के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से 5 दिसम्बर का दिन मनाया जाता है।
		अन्तर्राष्ट्रीय स्वयंसेवक दिवस	संयुक्त राष्ट्र ने 1985 में आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में घोषित किया था, जिसका उद्देश्य स्वयंसेवकों के योगदान को पहचानना और स्वयंसेवा को बढ़ावा देना है ताकि वे स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त करने में मदद कर सकें। यह दिन स्वयंसेवकों को सम्मानित करने और उन्हें एकजुट करने का एक वैश्विक मंच है जो बिना किसी स्वार्थ के समाज और समुदायों को मजबूत बनाने के लिए अपना समय और ऊर्जा देते हैं।
6.	दिसम्बर 6	महापरिनिर्वाण दिवस	देश और समाज को नई ऊँचाई पर पहुंचाने वाले बाबा साहब अंबेडकर का 6 दिसम्बर 1956 को निधन हुआ था। इसलिए हर साल इस दिन को उनकी याद और कभी न भूलाई जाने वाली उपलब्धियां के रूप में देखा जाता है।

7.	दिसम्बर 7	सशस्त्र सेना झंडा दिवस	आम्र्द फोर्सेज फ्लैग डे वो दिन है, जिस दिन सेना के शहीद जवानों के लिए जनता द्वारा फंडस इकट्ठे किए जाते हैं।
		अन्तर्राष्ट्रीय नागरिक उड़ायन दिवस	ये दिन दुनिया भर में राज्य के सामाजिक और आर्थिक विकास के महत्व और अंतर्राष्ट्रीय परिवहन में ICAO की भूमिका के बारे में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से मनाया जाता है।
8.	दिसम्बर 8	बोधि दिवस	बोधि दिवस (Bodhi Day) वह दिन है जब सिद्धार्थ गौतम को ज्ञान (बोधि) प्राप्त हुआ और वे भगवान बुद्ध बने; यह हर साल 8 दिसम्बर को मनाया जाता है, खासकर जापान और पश्चिमी देशों में, और बौद्ध धर्म में आत्मज्ञान और जागृति के प्रतीक के रूप में महत्वपूर्ण है, जिसमें ध्यान, प्रार्थना और बुद्ध की शिक्षाओं पर चिंतन किया जाता है, हालांकि कुछ पूर्वी एशियाई देशों में यह चंद्र कैलेंडर के अनुसार अलग तारीख (जैसे जनवरी) को पड़ता है।
9.	दिसम्बर 9	अन्तर्राष्ट्रीय भ्रष्टाचार विरोधी दिवस	दुनिया भर में ये दिन स्वास्थ्य, शिक्षा, न्याय, लोकतंत्र, समृद्धि और विकास पर पड़ने वाले भ्रष्टाचार के नकारात्मक प्रभाव का विरोध करने के उद्देश्य से मनाया जाता है। साथ ही इस दिन भ्रष्टाचार के समाज को कैसे प्रभावित करता है, उसकी जागरूकता फैलाई जाती है।
10.	दिसम्बर 10	मानवाधिकार दिवस	यूनाइटेड नेशंस जनरल असेंबली द्वारा इस दिन को 1948 में मानवाधिकार दिवस के रूप में अपनाया गया था। इसका उद्देश्य मानव आजादी और फंडामेंटल ह्यूमन राइट्स को बचाना है।
		अल्फ्रेड नोबेल पुण्यतिथि	मशहूर वैज्ञानिक, आविष्कारक, व्यापारी और नोबेल प्राइज के फाउंडर अल्फ्रेड नोबेल का 10 दिसम्बर 1869 में निधन हुआ था। उन्होंने डायनामाइट समेत कई ताकतवर विस्फोटकों का आविष्कार किया है।
11.	दिसम्बर 11	अन्तर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस	बच्चों और समाज को पर्वतों की महत्वता बताने के लिए इस दिन को मनाया जाता है। इसकी जागरूकता फैलाई जाती है कि, पर्वत हमें साफ पानी, एनर्जी, खाना प्रदान करते हैं और मानवता के लिए कितने जरूरी हैं।
		यूनिसेफ दिवस	संयुक्त राष्ट्र द्वारा यूनाइटेड नेशंस इंटरनेशनल चिल्ड्रन इमरजेंसी फंड के रूप में इस दिन को मनाया जाता है।
12.	दिसम्बर 12	अन्तर्राष्ट्रीय सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज दिवस	संयुक्त राष्ट्र द्वारा 12 दिसम्बर को इंटरनेशनल हेल्थ कवरेज दिवस घोषित किया गया है। इसके पीछे का उद्देश्य इस विषय में जागरूकता फैलाना है कि, दुनिया को कैसे एक मजबूत और अच्छे हेल्थ सिस्टम की जरूरत है।
13.	दिसम्बर 13	राष्ट्रीय अश्व दिवस	राष्ट्रीय अश्व दिवस (National Horse Day) हर साल 13 दिसम्बर को मनाया जाता है, जो घोड़ों के मानव सभ्यता, अर्थव्यवस्था और संस्कृति में दिए गए महत्वपूर्ण योगदान को सम्मानित करने के लिए समर्पित है; यह दिन परिवहन, कृषि, युद्ध और मनोरंजन में घोड़ों की ऐतिहासिक भूमिका को याद दिलाता है और उनके प्रति आभार व्यक्त करने का अवसर देता है। इस दिवस को 2004 में अमेरिकी अश्व परिषद (American Horse Council) द्वारा शुरू किया गया था और इसे अब विश्व स्तर पर मनाया जाता है।
14.	दिसम्बर 14	राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस	ऊर्जा और उसके संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से इस दिन को मनाया जाता है। विद्युत मंत्रालय के ब्यूरो ऑफ एनर्जी इफिशिएंसी द्वारा इसकी 1991 में शुरूआत की गई थी।
15.	दिसम्बर 16	विजय दिवस	देश के शहीदों की कुर्बानियों को याद करने के लिए ये दिन मनाया जाता है। तथा इस बात का समर्थन करने के लिए भी कि, देश के विकास और मजबूती के पीछे सेना की कितना बड़ा हाथ है।
16.	दिसम्बर 18	अन्तर्राष्ट्रीय प्रवासी दिवस	प्रवासियों और रिफ्यूजियों की सुरक्षा और प्रोटेक्शन के लिए जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से ये दिन मनाते हैं। उन लोगों को याद किया जाता है, जिन्होंने किसी सुरक्षित जगह पहुंचने से पहले ही प्राण त्याग दिए।

16.	दिसम्बर 18	भारत में अल्पसंख्यक अधिकार दिवस	अल्पसंख्यक आबादी के अधिकारों की रक्षा करने और बढ़ावा देने के उद्देश्य से ये दिन मनाया जाता है। इसका मुख्य फोकस राज्यों में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के मुद्दे पर होता है। 18 दिसम्बर को देश भर में इस अभियान की पूर्ति के लिए कई अभियान, सेमिनार और इवेंट्स करवाए जाते हैं। ताकि लोगों को इसके महत्व से अवगत शिक्षित और जागरूक कराया जा सकें।
17.	दिसम्बर 19	गोवा मुक्ति दिवस	इसी दिन साल 1961 में गोवा राज्य पुर्तगाली शासन से मुक्त हुआ था। आर्मी द्वारा एक ऑपरेशन चलाया गया था जिसे एक्सटेंडेड फ्रीडम मूवमेंट कहा गया।
18.	दिसम्बर 20	अन्तर्राष्ट्रीय मानव एकता दिवस	अनेकता में एकता के मकसद को बढ़ावा देने के लिए ये दिन मनाया जाता है। साथ एक ये गरीबी, भुखमरी और बीमारी से लड़ाई का भी संकेत देता है।
17.	दिसम्बर 21	शीतकालीन संक्रांति	शीतकालीन संक्रांति (Winter Solstice) एक खगोलीय घटना है जो उत्तरी गोलार्ध में 21 या 22 दिसम्बर को होती है, जब पृथ्वी का ध्रुव सूर्य से सबसे दूर झुका होता है, जिससे वर्ष का सबसे छोटा दिन और सबसे लंबी रात होती है। इसके बाद, दिन फिर से लंबे होने लगते हैं और हम वसंत की ओर बढ़ते हैं, इसलिए इसे पुनर्जन्म का प्रतीक माना जाता है। दक्षिणी गोलार्ध में यह घटना जून में होती है, जो उनके लिए ग्रीष्म संक्रांति होती है।
		विश्व ध्यान दिवस	विश्व ध्यान दिवस (World Meditation Day) हर साल 21 दिसम्बर को मनाया जाता है, जिसे संयुक्त राष्ट्र महासभा ने दिसम्बर 2024 में घोषित किया था ताकि मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए ध्यान के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाई जा सके; यह दिन आंतरिक शांति, आत्म-जागरूकता और वैश्विक सद्ब्दाव को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है और इसे शीतकालीन संक्रांति (winter solstice) पर चुना गया है, जो आत्मनिरीक्षण का प्रतीक है।
		विश्व बास्केटबॉल दिवस	विश्व बास्केटबॉल दिवस हर साल 21 दिसम्बर को मनाया जाता है, जिसे संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2023 में घोषित किया था, ताकि इस खेल की वैश्विक पहुंच, सांस्कृतिक महत्व और शांति व विकास को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका का जश्न मनाया जा सके, जो 1891 में डॉ. जेम्स नाइस्मिथ द्वारा इसके आविष्कार की वर्षगांठ भी है।
18.	दिसम्बर 22	राष्ट्रीय गणित दिवस	भारत के विख्यात गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की जन्म तिथि के उपलक्ष्य में इस दिन को मनाया जाता है। उनका जन्म 1887 में हुआ था और उन्होंने गणित के क्षेत्र में बहुत सराहनीय योगदान दिया है।
19.	दिसम्बर 23	किसान दिवस (चौधरी चरण सिंह जयंती)	भारत में हर साल ये दिन, पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की जन्मतिथि के रूप में मनाया जाता है। इस दिन कृषि क्षेत्र से संबंधित कई कार्यक्रम होते हैं और किसान तथा कृषि से जुड़े लोगों को सम्मानित किया जाता है।
20.	दिसम्बर 24	राष्ट्रीय उपभोक्ता अधिकार दिवस	इस दिन कंज्यूमर प्रोटेक्शन एक्ट 1986 को राष्ट्रपति का समर्थन मिला था। 24 दिसम्बर को हर साल उपभोक्ता के अधिकारों और जिम्मेदारियों से संबंधित जागरूकता फैलाई जाती है।
21.	दिसम्बर 25	क्रिसमस	ईसाई धर्म के लोगों के लिए ये दिन खास होता है। इस दिन प्रभु यीशु यानी जीसस क्राइस्ट का जन्म हुआ था।
		सुशासन दिवस	पूर्व प्रधानमन्त्री और भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई की जन्म तिथि के रूप में इस दिन का बहुत महत्व है। 2014 में इस दिन की शुरुआत हुई थी, ताकि देश की जनता में अच्छी सरकार का महत्व और जवाबदारी का भाव बना रहे।
		भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय की जयंती	भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय की जयंती हर साल 25 दिसम्बर को मनाई जाती है, क्योंकि उनका जन्म 25 दिसम्बर 1861 को प्रयागराज (तत्कालीन इलाहाबाद) में हुआ था, और उन्हें BHU (काशी हिंदू विश्वविद्यालय) के संस्थापक और स्वतंत्रता सेनानी के रूप में याद किया जाता है।

		<p>वीर बाल दिवस</p> <p>बीर बाल दिवस हर साल 26 दिसम्बर को मनाया जाता है, जो गुरु गोबिंद सिंह के छोटे साहिबजादों, साहिबजादा जोरावर सिंह और साहिबजादा फतेह सिंह के अद्वितीय बलिदान और वीरता को याद करने और उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए समर्पित है, जिन्हें धर्म और सच्चाई के लिए दीवार में जीवित चुनवा दिया गया था, और भारत सरकार ने 2022 में इसे मनाने की घोषणा की थी ताकि युवाओं को नैतिक मूल्यों और साहस से प्रेरित किया जा सके।</p>
22.	दिसम्बर 26	<p>बॉक्सिंग डे</p> <p>बॉक्सिंग डे हर साल 26 दिसम्बर को, क्रिसमस के ठीक अगले दिन मनाया जाने वाला एक दिवस है, जो मुख्य रूप से ब्रिटेन, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड जैसे राष्ट्रमंडल देशों में मनाया जाता है, जहाँ यह दान, उपहार देने और क्रिसमस की थकान मिटाने के लिए एक दिन होता है, और क्रिकेट में इसे 'बॉक्सिंग डे टेस्ट' मैच के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन को मनाने की परंपरा पुराने समय से चली आ रही है, जहाँ मालिक अपने कर्मचारियों और गरीबों को क्रिसमस के तोहफों वाले बक्से (boxes) देते थे, जिससे इसका नाम 'बॉक्सिंग डे' पड़ा।</p>
		<p>वीर बाल दिवस</p> <p>बीर बाल दिवस हर साल 26 दिसम्बर को मनाया जाता है, जो गुरु गोबिंद सिंह के छोटे साहिबजादों, साहिबजादा जोरावर सिंह और साहिबजादा फतेह सिंह के अद्वितीय बलिदान और वीरता को याद करने और उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए समर्पित है, जिन्हें धर्म और सच्चाई के लिए दीवार में जीवित चुनवा दिया गया था, और भारत सरकार ने 2022 में इसे मनाने की घोषणा की थी ताकि युवाओं को नैतिक मूल्यों और साहस से प्रेरित किया जा सके।</p>
23.	दिसम्बर 27	<p>अन्तर्राष्ट्रीय महामारी तत्प्रता दिवस</p> <p>अन्तर्राष्ट्रीय महामारी तत्प्रता दिवस (International Day of Epidemic Preparedness) हर साल 27 दिसम्बर को मनाया जाता है, जिसे संयुक्त राष्ट्र महासभा ने COVID-19 महामारी के अनुभवों के बाद वैश्विक स्तर पर महामारी की रोकथाम, तैयारी और प्रभावी प्रतिक्रिया के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए 2020 में स्थापित किया था। इस दिन का उद्देश्य स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर सूचनाओं के आदान-प्रदान, वैज्ञानिक ज्ञान और सर्वोत्तम प्रथाओं को बढ़ावा देना है, ताकि भविष्य के महामारियों से बेहतर तरीके से निपटा जा सके।</p>
24.	दिसम्बर 31	<p>नव वर्ष की पूर्व संध्या (न्यू ईयर ईव)</p> <p>न्यू ईयर्स ईव (New Year's Eve) यानी नए साल की पूर्वसंध्या, ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार 31 दिसम्बर की रात होती है, जब दुनिया भर में लोग नाच-गाना, आतिशबाजी और पार्टीयों के साथ नए साल (1 जनवरी) के आगमन का जश्न मनाते हैं, जिसमें अगले साल की खुशियों की उम्मीदें और पुरानी यादें होती हैं।</p>

चित्र-दीर्घा



महाविद्यालय उपलब्धियाँ
एवं गतिविधियाँ

एक-दिवसीय शिविर

दिनांक: 10.12.2025



विश्व मानवाधिकार दिवस के उपलक्ष में एन०एस०एस० प्रभारी डॉ० अंजु निगम द्वारा दिनांक 10.12.2025 को महाविद्यालय में “तृतीय एक-दिवसीय शिविर” का आयोजन किया गया। इस शिविर में छात्र-छात्राओं द्वारा महाविद्यालय प्रांगण एवं आस-पास के क्षेत्रों में सफाई में सक्रिय प्रतिभाग किया गया।

एक-दिवसीय कार्यशाला

दिनांक: 10.12.2025



महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ० गोरखनाथ की अध्यक्षता में आई०पी०आर० सेल कॉर्डिनेटर डॉ० महेश कुमार एवं को-कन्वेनर डॉ० कविन्द्र भट्ट द्वारा UCOST के प्रायोजन में दिनांक 10.12.2025 को बौद्धिक संपदा अधिकार विषयक “**Empowering Minds: Understanding How IPR Protects Ideas, Innovations and Creations**” शीर्षक एक-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

विश्वविद्यालय एथलेटिक्स मीट

दिनांक: 11.12.2025



सोबत सिंह जीना विंविं द्वारा आयोजित “एथलेटिक्स मीट” के अन्तर्गत आयोजित 200 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में भास्कर नैलवाल ने रजत पदक तथा त्रिकूद में गौरव कुमार एवं पवन कुमार ने क्रमशः स्वर्ण एवं कांस्य पदक जीत कर महाविद्यालय का नाम रौशन किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० जी०एस० यादव तथा क्रीड़ा प्रभारी डॉ० पीताम्बर दत्त पन्त द्वारा विजेता छात्रों को शुभकामनायें प्रदान की।

स्व० श्री इन्द्रमणि बडोनी जयन्ती दिवस

दिनांक: 24.12.2025



महाविद्यालय में दिनांक 24.12.2025 को “स्व० श्री इन्द्रमणि बडोनी जी के जयन्ती दिवस” के उपलक्ष में डॉ० रेखा एवं डॉ० गार्मी लोहनी द्वारा छात्र-छात्राओं हेतु बडोनी जी के जीवन पर आधारित पोस्टर व कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

कलाकारी अनुशासा

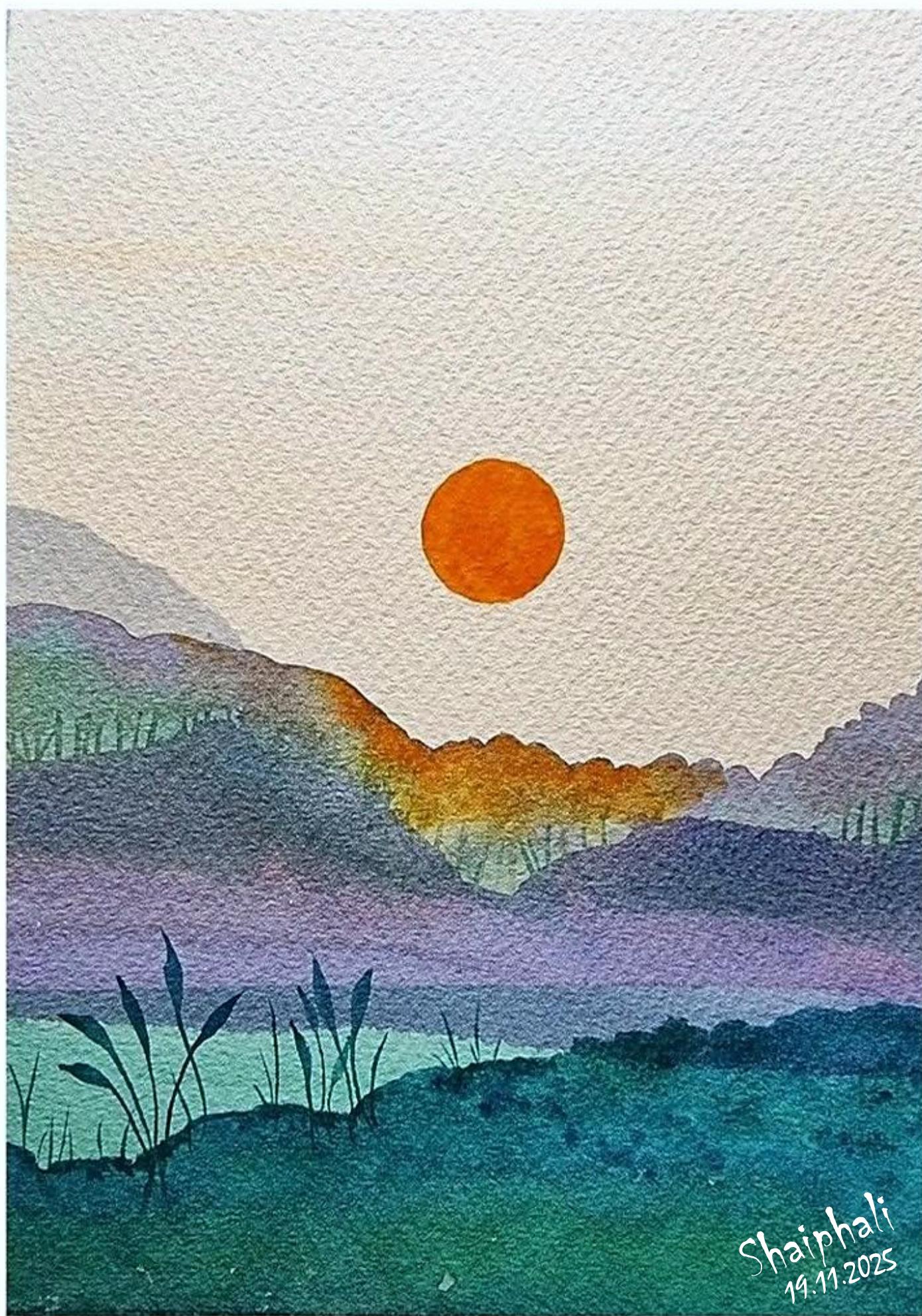






शिवानी
B.Sc. V. Sem.

चित्रण: शिवानी
बी०एस-सी० पंचम सेमेस्टर



Shaiphali
19.11.2025

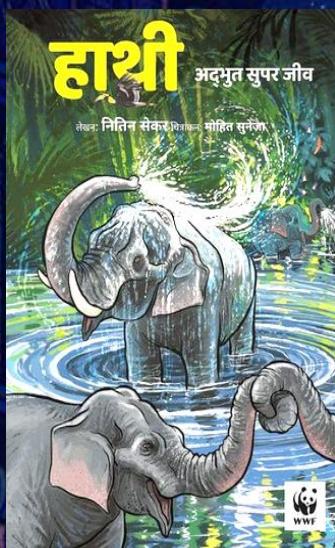
કુછ

અનુશાંસિત

પુસ્તકે



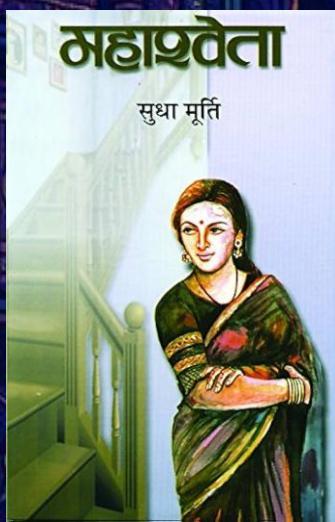
कुछ अनुशासित पुस्तकें



हाथी- अद्भुत जीव

लेखक: नितिन सेकर

यह पुस्तक हाथियों के प्राकृतिक इतिहास, शरीर क्रिया विज्ञान, पारिस्थितिकी, बुद्धिमत्ता और सामाजिक व्यवहार के वर्णन के माध्यम से उनकी अद्भुतता को दर्शाती है। यह पुस्तक अत्याधुनिक वैज्ञानिक शोधों से प्राप्त सरल निष्कर्षों और दुनिया भर के हाथियों से जुड़े किस्सों से भरी हुई है। सुपर क्रीचर्स हाथियों की संरक्षण स्थिति और पाठकों द्वारा उनकी सुरक्षा में किए जा सकने वाले योगदानों के बारे में भी बताती है। पुस्तक में डॉ. ए.जे.टी. जॉनसिंह द्वारा लिखित एक प्रस्तावना भी शामिल है। बच्चों को हाथियों से जुड़े कुछ सबसे रोमांचक तथ्यों और कहानियों से परिचित कराकर, हम हाथियों के प्रति उनकी समझ और समर्थन को बढ़ाने की आशा करते हैं।



महाश्वेता

लेखक: सुधा मूर्ति

"महाश्वेता" एक सशक्त और भावनात्मक रूप से मार्मिक उपन्यास है जो समाज के सतही पूर्वाग्रहों से ऊपर उठने का साहस रखने वाली एक महिला की शक्ति को दर्शाता है। प्रख्यात लेखिका सुधा मूर्ति द्वारा लिखित यह प्रेरणादायक कहानी अनुपमा नामक एक प्रतिभाशाली और सुंदर युवती की है, जिसका जीवन ल्यूकोडर्मा नामक बीमारी से ग्रस्त होने के बाद पूरी तरह बदल जाता है। ससुराल वालों द्वारा टुकराई गई और पति द्वारा त्यागी गई अनुपमा खुद को अकेली और समाज में कलंकित पाती है—लेकिन वह हार मानने से इनकार कर देती है।



दीवार में एक खिड़की रहती थी

लेखक: विनोद कुमार शुक्ल

इस उपन्यास में कोई महान घटना, कोई विराट संघर्ष, कोई युग-सत्य, कोई उद्देश्य या संदेश नहीं है क्योंकि इसमें वह जीवन, जो इस देश की वह ज़िंदगी है जिसे किसी अन्य उपयुक्त शब्द के अभाव में निम्न-मध्यवर्गीय कहा जाता है, इन्हे खालिस रूप में मौजूद है कि उन्हें किसी पिष्टकथ्य की ज़रूरत नहीं है। यहाँ खलनायक नहीं हैं किंतु मुख्य पात्रों के अस्तित्व की सादगी, उनकी निरीहता, उनके रहने, आने-जाने, जीवन-यापन के वे विरल ब्यौरे हैं जिनसे अपने-आप उस क्रूर प्रतिसंसार का एहसास हो जाता है जिसके कारण इस देश के बहुसंख्य लोगों का जीवन वैसा है जैसा कि है। एक सुखदत्तम अचंभा यह है कि इस उपन्यास में अपने जल, चट्टान, पर्वत, वन, वृक्ष, पशुओं, पक्षियों, सूर्योदय, सूर्यास्त, चंद्र, हवा, रंग, गंध और ध्वनियों के साथ प्रकृति इतनी उपस्थित है जितनी फणीश्वरनाथ रेणु के गल्प के बाद कभी नहीं रही।

देश दुनिया के कुछ रोचक तथ्य





क्या आपने कभी सोचा है कि **bodyguards** के बैग में क्या होता है और यह प्रधान मंत्री के साथ क्यों धूमते हैं? असल में यह बैग नहीं बल्कि एक **bulletproof layer** है जो चादर की तरह खुल जाती है और किसी अनहोनी में इसके पीछे छिपा जा सकता है। किसी भी अटैक से बचने के लिए यह सबसे तेज़ उपाय है।



दरअसल इस तकनीक को **टेलीप्रायटर** कहते हैं। इसमें बोलने वाले के सामने एक स्क्रीन होती है जिसमें सिर्फ बोलने वाले को ही लिखा हुआ दिखाई देता है पर दर्शकों को सिर्फ खाली स्क्रीन ही दिखाई देती है।





THIS MORNING

ent in Washington
Announcement at
2:45 o'Clock.

TERMS OF THE TREATY
TERMS INCLUDE WITHDRAWAL FROM
DISARMAMENT AND DEMOBILIZATION
NAVY, AND OCCUPATION
NAVAL AND MILITARY

Naval
WASHINGTO^N M
M. Theat.
band, and
United St^t
4

राजपार

समाचार

So does she not have ambition to write her own literary fiction? "Not really. I couldn't possibly. And the man I read (I just read *American Pastoral* by Philip Roth for the first time) more I'm exposed to all these voices and writers, and I couldn't know how writers do what they do. It's such an extraordinary location, I don't know how they sit down and I can't imagine what kind of book and a good book." Parker has set out to like to think what she offers me.

A stack of newspapers, with the top one showing the masthead "Daily Leader Business Journal".

देश में 2025/2026 की आगामी परीक्षायें

अखिल भारतीय केंद्र सरकार और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में रोजगार (2026 की शुरुआत)

- **NDMA (राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण):** सीनियर कंसल्टेंट की भर्ती। आवेदन 30 जनवरी 2026 तक।
- **उत्तर प्रदेश पुलिस (UPPRPB):** कांस्टेबल और जेल वार्डर के 32,679 पद। आवेदन की अंतिम तिथि 30 जनवरी 2026 है।
- **रेलवे भर्ती बोर्ड (RRB Group D):** लेवल-1 के 22,000+ पदों पर भर्ती प्रक्रिया शुरू।

अधिक विवरण कैसे प्राप्त करें

- **रोजगार समाचार:** रोजगार समाचार आधिकारिक अधिसूचनाओं और उनकी तिथियों के लिए एक प्राथमिक स्रोत है।
- **परीक्षा पोर्टल:** करियर 360 और करियर पावरजैसी प्रतिष्ठित वेबसाइटें भी सरकारी नौकरियों के बारे में अद्यतन जानकारी प्रदान करती हैं।

उत्तराखण्ड में 2025 की आगामी परीक्षायें

उत्तराखण्ड राज्य सरकार एवं स्थानीय रोजगार (2026 के आगामी)

- **उत्तराखण्ड लोक सेवा आयोग (UKPSC):** प्रवक्ताओं (Lecturers) के 808 पद। आवेदन की अंतिम तिथि 20 जनवरी 2026 है।
- **उत्तराखण्ड उच्च न्यायालय:** सहायक समीक्षा अधिकारी (ARO) और लाइब्रेरियन के रिक्त पद। अंतिम तिथि: 20 जनवरी 2026।

अपडेट कैसे रहें

सबसे सटीक और विस्तृत जानकारी के लिए, आधिकारिक वेबसाइटों पर जाना सबसे अच्छा है:

- **यूकेपीएससी:** psc.uk.gov.in
- **यूकेएसएसएससी:** sssc.uk.gov.in

जन्मभूमि



हे जनमा भूमि त्येरि जै जै कारी हो,
गांव झूमी-झूमी त्येरि जै जै कारी हो।

हम छौं त्यरा बीरा घर मनमा धीरा,
कृष्ण ज्यू कौ चक्र छौं हम,
राम ज्यू कौ तीरा। त्येरि जै जै ...।

क्ये रुपसा माटी कैं धुरा कैं घाटी,
कां बटी कां लग पुज्यां ठाड़ हुल्यार बाटी।
त्येरि जै जै ...।

यों हरियां सारी सारयों मजा ब्वारी,
छल छलानी गाड़ गद्यार तड़तड़े छौं धारी।
त्येरि जै जै ...।

हम सब त्यर च्यल छौं, श्यू-बागों का र्यल छौं,
बांदि बै कफन जो नाचनी हम यसा अल्ब्याल छौं।
त्येरि जै जै ...।

—स्व०श्री हीरा सिंह राणा जी को सादर नमन

“सा विद्या या विमुक्तये”

कवर डिजाइन: डॉ० शैफाली सक्सेना

